

खंड-9

राजधर्म

भारत में शासन और लोकनीति

सनातन ज्ञान : युवा उत्थान



भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित प्रतियोगी परीक्षाओं
(नेट और यूपीएससी) के लिए एक संक्षिप्त पुस्तक





सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि ।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

देवी सरस्वती को प्रणाम,
जो वर देने वाली और इच्छाओं को पूर्ण करने वाली हैं ।
हे देवी, जब मैं अपने अध्ययन की शुरुआत करूँ,
कृपया मुझे हमेशा सही समझ की शक्ति दें ।

Salutations to Devi Saraswati,
the giver of boons and fulfiller of wishes.
O Devi, When I begin my studies,
please bestow on me the capacity of right understanding always



विद्या भारती
उच्च शिक्षा संस्थान
Vidya Bharati
Uchcha Shiksha Sansthan

H-107A, Sector-12, Noida, Gautam Buddha Nagar, (Uttar Pradesh), PIN – 201301
Telephone : 0120-4338616, Mobile: 9999694251

E-mail : vbheducation@gmail.com, contact@vbuss.org

Twitter/Facebook/Instagram : @VBUSSOrg

<http://vbuss.org>

Drafting Committee / Team

- | | |
|--|---|
| • Dr. Meenakshi Sharma
ACBR, University of Delhi | • Mr. Jitender Kumar
University of Delhi |
| • Dr. Mansi Yuvendar Chaudhary
Rajdhani College, University of Delhi | • Ms. Kajal Sharma
University of Delhi |
| • Dr. Shobhita Singal
MLNC, University of Delhi | • Ms. Geeta Chaudhary
University of Delhi |
| • Dr. Deepak Kumar
DRC, University of Delhi | • Mr. Pradeep K. Pandey
University of Delhi |
| • Ms. Prakshi Soni
University of Delhi | |

राजधर्म

भारत में शासन और लोकनीति



भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित प्रतियोगी परीक्षाओं (नेट और यूपीएससी)
के लिए एक संक्षिप्त पुस्तक



विद्या भारती
उच्च शिक्षा संस्थान
सा विद्या या विमुक्तये

किताबवाले
नयी दिल्ली-110002



अस्वीकरण

यह पुस्तक प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं से संबंधित विभिन्न शास्त्रीय ग्रंथों, साहित्यिक स्रोतों और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सामग्रियों के अध्ययन एवं उनकी व्याख्या पर आधारित एक विद्वत्पूर्ण कृति है। यद्यपि इसकी संरचना, विषयवस्तु या प्रवाह में कुछ तत्व पूर्ववर्ती कृतियों अथवा पारंपरिक साहित्य से मेल खा सकते हैं, किन्तु ये समानताएँ केवल संयोगवश हैं और विषय की प्रामाणिकता बनाए रखने के उद्देश्य से रखी गई हैं। हमने यह सुनिश्चित करने का हर संभव प्रयास किया है कि प्रस्तुत सामग्री तथ्यपरक, जानकारीपूर्ण और मूल स्रोतों के प्रति पूर्ण सम्मानभाव से युक्त हो। इस कृति में व्यक्तिगत अनुसंधान, सृजनात्मकता और शैक्षणिक परिश्रम के परिणामस्वरूप नवीन विश्लेषण, अद्यतन व्याख्याएँ, नए विषय, चित्रण और संदर्भ विस्तार सम्मिलित किए गए हैं। मौजूदा स्रोतों से प्राप्त सभी प्रेरणाएँ और संदर्भ पूर्ण सद्भावना एवं शैक्षणिक/ज्ञान-वितरण के उद्देश्य से प्रयोग किए गए हैं। इस पुस्तक का उद्देश्य किसी भी प्रकार के कॉपीराइट या बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन करना नहीं है। यदि अनजाने में किसी सामग्री से ऐसे किसी अधिकार का अतिक्रमण हुआ हो, तो सूचित किए जाने पर सम्पादक आवश्यक संशोधन या यथोचित स्वीकृति देने को तत्पर है।

© विद्या भारती उच्च शिक्षा न्यास, दिल्ली प्रांत

शीर्षक : राजधर्म: भारत में शासन और लोकनीति

सम्पादक : प्रो. राज किशोर शर्मा, डॉ. दीपक कुमार

संस्करण : 2025

ISBN : 978-93-49531-09-3

मूल्य : 250/-

प्रकाशक:

किताबवाले

नई दिल्ली-110002

सहयोग:

विद्या भारती

उच्च शिक्षा संस्थान, नोएडा

मुद्रक:

जी.के. फाईन आर्ट प्रेस

पटपड़ गंज, नई दिल्ली

शुभकामना संदेश

प्रिय मित्रों,

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है, साथ ही एक गहरा उत्तरदायित्व भी, कि मैं आपके समक्ष 'भारत बौद्धिक्स' परियोजना को प्रस्तुत कर रहा हूँ। भारत बौद्धिक्स विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा प्रारंभ किया गया एक राष्ट्रीय शैक्षिक अभियान है, जिसका मुख्य उद्देश्य हमारे युवाओं को गुणात्मक, सर्वांगीण और समग्र विकास की शिक्षा के साथ-साथ उनके मन और मस्तिष्क में भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करना है।



जैसा कि हम सभी जानते हैं, विज्ञान, दर्शन, शासन, आरोग्य और कला जैसे अनेक क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परंपराएँ हजारों वर्षों से मानवता का मार्गदर्शन करती रही हैं। आज जब पूरी दुनिया एक संतुलित, नैतिक और समावेशी विकास मॉडल की खोज में है, ऐसे समय में हमारे प्राचीन ग्रंथ और विचार केवल इतिहास की धरोहर नहीं रह गए हैं, बल्कि वे प्रेरणा और नवाचार के जीवंत स्रोत बनकर सामने आ रहे हैं। भारत बौद्धिक्स का प्रयास है कि इस अमूल्य विरासत को आज के विद्यार्थियों के लिए सुलभ, समसामयिक और सार्थक रूप में प्रस्तुत किया जाए।

हमारे विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई 21 पुस्तकों की एक विशेष श्रृंखला, इस परियोजना का मूल आकर्षण है। जिसे तीन प्रमुख क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है:

1. **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी:** इस खंड में वैदिक गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, धातु विज्ञान, मंदिर वास्तुकला और पारंपरिक पर्यावरण ज्ञान जैसे विषयों के माध्यम से भारत की वैज्ञानिक परंपराओं को उजागर किया गया है।
2. **कला एवं मानविकी:** यह खंड नाट्यशास्त्र, शास्त्रीय भाषाओं, संगीत, साहित्यिक परंपराओं और प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक समृद्धि और सौंदर्यबोध को प्रतिबिंबित करता है।

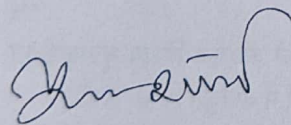
3. **समाजशास्त्र एवं अर्थनीति:** इसमें राजधर्म, अर्थशास्त्र, कृषि, ग्रामीण उद्योग, और शासन-प्रणाली जैसे विषयों को शामिल किया गया है, जो संतुलित और नैतिक समाज निर्माण की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

इन पुस्तकों के माध्यम से युवाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु हम 23 जनवरी 2026, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती के अवसर पर, एक राष्ट्रीय परीक्षा का आयोजन कर रहे हैं। यह परीक्षा पूरे देश के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए खुली होगी। इस परीक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का मूल्यांकन करना नहीं है, बल्कि जिज्ञासा जगाना, आत्मचिंतन को प्रेरित करना, और भारतीय सभ्यता के गौरव के प्रति गर्व की भावना को जागृत करना है।

परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को **राष्ट्रीय भारत बौद्धिक्स कॉन्क्लेव** में आमंत्रित किया जाएगा। यह एक ऐसा मंच होगा जहाँ वे अपने विचार साझा करेंगे, मार्गदर्शकों से संवाद करेंगे और **भारतीय कला एवं समाज** भारतीय ज्ञान प्रणाली के जीवंत अनुभव से जुड़ सकेंगे। **भारत बौद्धिक्स** मात्र एक शैक्षिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह एक यात्रा है: **ज्ञान से बोध की ओर**। यह हमें हमारे मूल से जुड़ने, अपने भविष्य की पुनर्कल्पना करने और भारत की आत्मा को पुनः समझने का अवसर देता है।

मैं देशभर के सभी छात्रों, शिक्षकों और शैक्षणिक संस्थानों से हार्दिक आग्रह करता हूँ कि वे इस पुनराविष्कार और परिवर्तन की यात्रा में हमारे सहभागी बनें। आइए, हम मिलकर एक ऐसी पीढ़ी के निर्माण में सहायक बनें, जो बौद्धिक रूप से जागरूक, संस्कृति के प्रति संवेदनशील और वैश्विक दृष्टिकोण से उत्तरदायी हो।

सादर, सस्नेह



प्रो. कैलाश सी. शर्मा

अध्यक्ष, विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान
अध्यक्ष, हरियाणा राज्य उच्च शिक्षा परिषद
पूर्व कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

विषय सूची

प्रस्तावना	9
विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान	11
1. भूमिका - वैदिक काल और शासकीय व्यवस्था	13
2. वैदिक काल में राजनीतिक संरचना	13
3. शासकीय व्यवस्था में धर्म का सिद्धांत	14
4. पुजारियों की भूमिका	15
5. अर्थ की अवधारणा और समाज और शासन में इसकी भूमिका	15
6. शासन तंत्र: राजतंत्र एवं लोकतंत्र	17
7. अर्थशास्त्र से अंतर्दृष्टि	17
8. अर्थशास्त्र: प्राचीन शासन और प्रशासन की रूपरेखा	19
9. कौटिल्यन राज्य: प्रशासन का एक व्यावहारिक मॉडल	22
10. राज्य के सात तत्व: शासन की रूपरेखा	23
11. प्रशासनिक व्यवस्था	37
12. महाकाव्यों से लोक प्रशासन के परिप्रेक्ष्य: महाभारत और रामायण	42
13. निष्कर्ष	49
सुझावात्मक पठनीय सामग्री	50
बहु विकल्पीय प्रश्न	52
उत्तर-दर्शिका	83

The key Hindu concept of dharma - the right way, the sanctioned way, which all men must follow, according to their natures - is an elastic concept. At its noblest it combines self-fulfillment and truth to the self with the ideas of action as duty, action as its own spiritual reward, man as a holy vessel.

Source: *Bulia A Wounded Civilization* - by VS Naipaul

VS Naipaul



Renowned Indo-Trinidadian-British writer; he received the Nobel prize in literature in 2001. He has been called 'A Master of Modern Prose' and has been awarded numerous prizes, including the John Llewellyn Rhys Prize, the Somerset Maugham Award, the Booker Prize, and the David Cohen Prize for a lifetime's achievement in British literature

प्रस्तावना

यह पुस्तक "राजधर्म: प्राचीन भारत में शासन और लोकनीति" प्राचीन भारतीय राज्यशास्त्र की मूल अवधारणाओं एवं व्यवहारिक दृष्टिकोणों को प्रकाश में लाने का एक विनम्र प्रयास है। अर्थशास्त्र, महाभारत, रामायण तथा राजधर्म पर आधारित अन्य ग्रंथों के माध्यम से यह कृति न केवल भारत के पारंपरिक शासकीय ज्ञान को प्रस्तुत करती है, अपितु आधुनिक शासन प्रणाली से उसका सजीव संबंध भी स्थापित करती है।

भारतीय परंपरा में शासन सदा से धर्म (नैतिक उत्तरदायित्व), अर्थ (भौतिक समृद्धि), एवं सामाजिक समरसता का समन्वय रहा है। यह विचार प्रणाली न तो जड़ थी और न ही केवल धार्मिक; अपितु यह गहन, व्यावहारिक और दूरदर्शी थी। इसमें न केवल नीति और धर्म की व्याख्या है, बल्कि प्रशासनिक ढांचे, कर व्यवस्था, विदेश नीति, न्याय प्रणाली, एवं सैन्य संगठन जैसी व्यवस्थाओं का भी विशद वर्णन मिलता है।

विशेषतः कौटिल्य रचित अर्थशास्त्र एक ऐसा ग्रंथ है जो शासन के नैतिक एवं प्रशासनिक दोनों पक्षों को समाहित करता है। इसमें राज्य की स्थिरता, जनकल्याण एवं शासक के नैतिक आचरण को प्रमुखता दी गई है। यह ग्रंथ शासन व्यवस्था की केवल शक्ति का साधन नहीं, अपितु एक लोक-सेवक की भूमिका के रूप में प्रस्तुत करता है।

यह पुस्तक विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान (VBUSS) के सतत प्रयासों का अंग है, जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुद्धार एवं उसे वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली में समाहित करना है। इस प्रयास के माध्यम से हम छात्रों में न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता, अपितु चरित्र, उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रभावना का भी संचार करना चाहते हैं।

हमें विश्वास है कि यह पुस्तक भारत के समृद्ध प्रशासनिक ज्ञान को 21^{वीं} शताब्दी की शासन चुनौतियों से जोड़ने का सेतु सिद्ध होगी। छात्र, शिक्षक, लोकसेवक एवं सभी ज्ञान-सेवी पाठकों के लिए यह ग्रंथ उपयोगी एवं प्रेरणास्पद सिद्ध होगा।

विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान



विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान (VBUSS) भारतीय परंपराओं में निहित एक समग्र, मूल्य-आधारित ढांचे के अंतर्गत शैक्षणिक उत्कृष्टता, चरित्र निर्माण और राष्ट्र-निर्माण पर बल देते हुए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। **"सा विद्या या विमुक्तये"** - अर्थात् "वह ज्ञान जो मुक्त करता है" - इस प्रेरणादायक ध्येय वाक्य से संचालित होकर, VBUSS ऐसी पीढ़ी के निर्माण का संकल्प करता है जो न केवल शैक्षणिक दृष्टि से दक्ष हो, अपितु सामाजिक रूप से उत्तरदायी एवं आध्यात्मिक रूप से जागरूक भी हो।

संस्थान उच्च शिक्षा के मूल तत्वों के रूप में समालोचनात्मक चिन्तन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक जीवन और गहन सांस्कृतिक समझ को प्रमुखता प्रदान करता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में विस्तृत शैक्षणिक तंत्र के माध्यम से VBUSS ने उल्लेखनीय प्रभाव डाला है। यह संस्था अनेक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों, डिग्री संस्थानों तथा व्यावसायिक केन्द्रों का संचालन कर, देश में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता तथा उपलब्धता को सुदृढ़ करने का कार्य कर रही है।

उपलब्धियों की दृष्टि से भी VBUSS ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय प्रगति की है। संस्थान ने सम्पूर्ण भारत में महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों का एक सुदृढ़ तंत्र स्थापित किया है, जो विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला एवं सामाजिक विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। कठोर पाठ्यक्रमों और अनुसंधान पहलों के माध्यम से निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता को सुनिश्चित करते हुए, इसने शिक्षा क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु मान्यता प्राप्त की है।

विद्या भारती ने वंचित समुदायों को शिक्षा उपलब्ध कराकर सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने में भी सक्रिय भूमिका निभाई है, जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच का अंतर कम हुआ है।

अपने सतत प्रयासों द्वारा VBUSS भारत के भविष्य को कुशल, ज्ञानसम्पन्न एवं नैतिक नेतृत्व प्रदान कर रहा है। आधुनिक शैक्षणिक विषयों का प्राचीन भारतीय ज्ञान से समन्वय कर, VBUSS राष्ट्र के प्रति समर्पित, जिम्मेदार और जागरूक नागरिकों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

VBUSS प्राचीन भारतीय ज्ञान को पुनः जागृत कर समकालीन शिक्षा प्रणाली में एकीकृत करने के राष्ट्रीय आंदोलन में अग्रदूत के रूप में प्रतिष्ठित है। प्रस्तुत पुस्तक इस महान अभियान में एक विनम्र योगदान है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख विचारों, दार्शनिक अवधारणाओं एवं विभिन्न शास्त्रों को एक सुलभ एवं विचारोत्तेजक स्वरूप में संकलित करता है।

राजधर्म: भारत में शासन और लोकनीति

1. भूमिका - वैदिक काल और शासकीय व्यवस्था

राजधर्म, जो कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शन में निहित एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, शासक के अपने प्रजा और राज्य के प्रति नैतिक और धार्मिक कर्तव्यों को दर्शाता है। यह न्याय, निष्पक्षता, जवाबदेही और जनकल्याण को शासन के मूल दायित्वों के रूप में प्रमुखता देता है। उस समय के राजा केवल राजनीतिक नेता नहीं माने जाते थे, बल्कि उन्हें नैतिक आदर्श के रूप में देखा जाता था, जो मनुस्मृति और महाभारत जैसे पवित्र ग्रंथों द्वारा मार्गदर्शित होते थे।

वैदिक काल (लगभग 1500 ई.पू. से 500 ई.पू.) भारत के रिकॉर्डेड इतिहास का प्रारंभिक चरण है। इसी काल में वह नींव रखी गई थी, जो बाद में उपमहाद्वीप को आकार देने वाली कई राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं का आधार बनी। वैदिक समाज जटिल और सूक्ष्म तरीके से विकसित हुआ, जिसमें शासकीय व्यवस्था पर जनजातीय रिवाजों और धार्मिक सिद्धांतों का गहरा प्रभाव पड़ा। वैदिक काल के दौरान प्रशासन मुख्य रूप से विकेंद्रीकृत था, जिसमें राजनीतिक नेताओं और धार्मिक व्यक्तित्वों दोनों की महत्वपूर्ण भूमिकाएं थीं।

2. वैदिक काल में राजनीतिक संरचना

वैदिक काल को दो चरणों में बांटा जा सकता है: प्रारंभिक वैदिक काल (ऋग्वेद) और उत्तरवैदिक काल (यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद)। इस समय की राजनीतिक संरचना प्रारंभ में जनजातीय, विकेंद्रीकृत और पारिवारिक या कुटुंब आधारित व्यवस्था पर आधारित थी। जनजाति या कबीला मुख्य राजनीतिक इकाई था, और शासकीय व्यवस्था का विचार परिवार या कबीला आधारित प्रणालियों से जुड़ा हुआ था।

राजा और सभा

प्रारंभिक वैदिक काल में राजनीतिक संगठन जनजाति या जनता (जिसका अर्थ “लोग” होता है) के विचार पर आधारित था, जिसे छोटे समूहों में बांटा गया था, जिन्हें कुल (परिवार) कहा जाता था। प्रत्येक जनजाति का एक नेता होता था जिसे राजा कहा जाता था, यह शब्द सामान्यतः “राजा” के रूप में अनुवादित किया जाता है। हालांकि, प्रारंभिक वैदिक समाज में राजा का कार्य एक पूर्णतः सम्राट के रूप में नहीं था, बल्कि वह एक जनजातीय प्रमुख या संरक्षक के रूप में था। राजा का चयन योग्यता और नेतृत्व क्षमता के आधार पर किया जाता था, जो अक्सर जनजाति द्वारा चुना या समर्थित होता था और उसकी मुख्य जिम्मेदारी लोगों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करना होती थी।

राजा की शक्तियां पूर्णतः अभेद्य नहीं थीं; वे सभा और समिति जैसी जनजातीय संगठनों द्वारा नियंत्रित होती थीं। ये संगठनों निर्णय-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे और इनका गठन जनजातीय बुजुर्गों और प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा किया जाता था। इनका कार्य विवादों को सुलझाना, राजा को सलाह देना और निर्णयों के लिए सहमति देना होता था, विशेष रूप से युद्ध और शांति संधियों के संदर्भ में। समिति एक बड़ा और समावेशी शरीर था, जबकि सभा को अक्सर एक अधिक चयनित और अधिकारिक परिषद के रूप में देखा जाता था।

राजा की भूमिका

प्रारंभिक वैदिक काल में राजा की भूमिका मुख्य रूप से एक नेता के रूप में थी, जो युद्ध में भाग लेता था, लोगों का संरक्षक होता था और शांति और व्यवस्था बनाए रखता था। राजा के पास मंत्रियों या सलाहकारों की एक परिषद होती थी, जिन्हें मंत्रि कहा जाता था, जो जनजातीय मामलों के प्रशासन में मदद करते थे। हालांकि, वैदिक शासन का एक विशेष लक्षण था: राजा की सत्ता फिर भी धर्म (नैतिक कानून या कर्तव्य) के सिद्धांतों द्वारा सीमित होती थी और वह जनजाति की इच्छा के अनुसार कार्य करता था, जैसा कि सभा और समिति के माध्यम से व्यक्त किया जाता था।

3. शासकीय व्यवस्था में धर्म का सिद्धांत

वैदिक काल की शासकीय व्यवस्था में धर्म एक केंद्रीय सिद्धांत था, जिसका अर्थ था एक नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत आचरण से संबंधित कानूनों का संग्रह, जो किसी

व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करते थे। धर्म केवल व्यक्तिगत आचरण से संबंधित नहीं था, बल्कि समाज की शासकीय व्यवस्था भी इससे प्रभावित थी।

धर्म और राजतंत्र

राजा का कर्तव्य यह सुनिश्चित करना था कि समाज धर्म के अनुसार चले। वैदिक ग्रंथों में, विशेष रूप से ऋग्वेद में, राजा को रित (सार्वभौमिक व्यवस्था) और धर्म का रक्षक बताया गया है, जो यह सिद्ध करता है कि उसका कर्तव्य दोनों आध्यात्मिक और सामाजिक सद्भाव बनाए रखना था। धर्म का सिद्धांत राजधर्म (शासक के कर्तव्य) से भी जुड़ा हुआ था, जिसमें राजा से यह अपेक्षाएं की जाती थीं कि वह न्याय का प्रशासन करे, प्रजा की रक्षा करे और राज्य की भलाई सुनिश्चित करे। यदि कोई राजा अपने कर्तव्यों में विफल रहता था, यदि वह अन्याय या अत्याचार को बढ़ावा देता था, तो उसे राजधर्म में विफल माना जाता था, और इससे विद्रोह या प्रजा का समर्थन खोने की संभावना होती थी।

4. पुजारियों की भूमिका

वैदिक काल में पुजारियों, जिन्हें ब्राह्मण कहा जाता था, का शासकीय व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान था। वे केवल धार्मिक नेता नहीं थे, बल्कि राजा के प्रमुख सलाहकार भी होते थे। विशेष रूप से वे ब्राह्मण, जो वैदिक ग्रंथों में निपुण होते थे, को पवित्र ज्ञान के रक्षक के रूप में देखा जाता था और वे निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण सलाहकार भूमिका निभाते थे। हालांकि, उनका शासन में योगदान उनके धार्मिक अनुष्ठानों के पालन और नैतिक और धार्मिक मामलों में मार्गदर्शन देने पर आधारित था, जिसे राजा को पालन करना अपेक्षित होता था।

5. अर्थ की अवधारणा और समाज और शासन में इसकी भूमिका

प्राचीन भारतीय परंपराओं के अनुसार, अर्थ जीवन के तीन प्राथमिक उद्देश्यों में से एक है, विशेष रूप से सांसारिक गतिविधियों में लगे व्यक्तियों के लिए। यह भौतिक कल्याण और आर्थिक स्थिरता का प्रतिनिधित्व करता है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक है। इस शब्द में न केवल व्यक्तिगत संपत्ति बल्कि संसाधनों का व्यापक ढांचा और सामाजिक कल्याण के लिए उनका स्थायी उपयोग भी शामिल है।

आजीविका के स्तंभ के रूप में अर्थ

व्यक्तियों के लिए, अर्थ की खोज बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने का साधन सुनिश्चित करती है, जिससे आर्थिक अस्तित्व से संबंधित चुनौतियाँ कम हो जाती हैं। सामाजिक स्तर पर, व्यक्तियों की भलाई पृथ्वी से प्राप्त संसाधनों के स्थायी प्रबंधन पर निर्भर करती है। इन संसाधनों का उचित अधिग्रहण और संरक्षण महत्वपूर्ण है क्योंकि ये आजीविका का आधार बनते हैं। दीर्घकालिक सामाजिक समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त भौतिक संपदा का उपभोग स्थिरता के सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए।



एक संतुलित समाज के स्तंभ

इस संदर्भ में देखा जाए तो अर्थ व्यक्तिगत आकांक्षाओं से परे जाकर सामाजिक कल्याण की आधारशिला बन जाता है, तथा निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है:

1. समाज को व्यक्तियों और सामूहिक दोनों के लाभ के लिए संसाधनों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए खुद को कैसे व्यवस्थित करना चाहिए?
2. प्राकृतिक संसाधनों की खपत को विनियमित और नियंत्रित करने के लिए कौन से तरीके स्थापित किए जाने चाहिए?
3. स्थायी प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए किन शासन तंत्रों की आवश्यकता है?

6. शासन तंत्र: राजतंत्र एवं लोकतंत्र

प्राचीन शासन प्रणालियाँ संरचना में भिन्न थीं, जिनमें राजशाही प्रमुख मॉडलों में से एक थी। इस प्रणाली में, राजा सर्वोच्च प्राधिकार रखता था और अक्सर वंशानुगत उत्तराधिकार के माध्यम से सत्ता हस्तांतरित करता था। इसके विपरीत, लोकतंत्र एक विपरीत मॉडल के रूप में उभरा, जिसमें सत्ता निर्वाचित प्रतिनिधियों में निहित होती है जो सीमित अवधि के लिए शासन करते हैं, लोगों के प्रति जवाबदेह होते हैं।



राजतंत्र बनाम लोकतंत्र

आधुनिक शब्दावली—जैसे लोक प्रशासन और शासन—इन विचारों को अभिव्यक्त करती है और संरचित पद्धतियों और संस्थाओं की आवश्यकता पर बल देती है। प्राचीन और समकालीन, दोनों ही संदर्भों में, नागरिकों के कल्याण के लिए नीतियाँ बनाने और नियमों का पालन सुनिश्चित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

7. अर्थशास्त्र से अंतर्दृष्टि

राजधर्म पर आधारित ग्रंथों में, चाणक्य (कौटिल्य) द्वारा रचित अर्थशास्त्र एक मौलिक कृति है, जो शासन, संसाधन प्रबंधन और लोक प्रशासन पर व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जबकि अन्य ग्रंथ भी मूल्यवान दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, अर्थशास्त्र शासन कला और आर्थिक नीति पर अपने विस्तृत दिशानिर्देशों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो इसे प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शन की आधारशिला बनाता है।

तालिका 1: राज-धर्म के बारे में कुछ भारतीय ग्रंथ

पाठ का नाम	मुख्य अनुभाग/संरचना	मुद्दों पर चर्चा की गई
महाभारत	शांति पर्व और अनुशासन पर्व	राजधर्म के विभिन्न पहलुओं को शामिल करता है राज-धर्म. इसमें युधिष्ठिर और भीष्म के बीच संवाद और एक राजा के नैतिक और प्रशासनिक कर्तव्यों का विवरण शामिल है।
मनु-स्मृति	अध्याय 7 और 9	राजाओं के कर्तव्यों, कानूनी प्रणालियों और न्याय के सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
कौटिल्य का अर्थशास्त्र	6,500 श्लोकों को 15 पुस्तकों में व्यवस्थित किया गया	राजधर्म, शासन, अर्थशास्त्र, सैन्य रणनीति और लोक प्रशासन पर व्यापक ग्रंथ।
कामन्दक की नितिशास्त्र	20 अध्याय	शासकों के दायित्वों, सरकारी संगठन, सिद्धांतों और नीतियों, अंतरराज्यीय संबंधों, दूतों और जासूसों की नैतिकता और विभिन्न प्रकार के युद्ध पर चर्चा करता है।
मानसोलास या अभिलाषितार्थ-चिंतामणि	पहली दो पुस्तकों में 40 अध्याय (1,600 छंद) हैं	राजाओं और मंत्रियों की योग्यता, उनके कर्तव्य और नैतिक गुण, शासन और आर्थिक प्रबंधन शामिल हैं।
चंद्रेश्वर के राजनीति-रत्नाकर	16 अध्यायों में व्यवस्थित	राजाओं, मंत्रियों, दुर्गों, सैन्य संगठन, राजकोष प्रबंधन, प्रशासन, नए शासकों की नियुक्ति और राज्याभिषेक अनुष्ठानों पर चर्चा करता है।
केशव पंडित की दण्डनीति	6 अध्याय	आपराधिक न्याय पर ग्रंथ. इसमें अपराध, दंड, आपराधिक प्रक्रियाएं, चोरी, व्यभिचार, बलात्कार, मानहानि, बदनामी, हमला और अन्य कानूनी मामले शामिल हैं।

8. अर्थशास्त्र: प्राचीन शासन और प्रशासन की रूपरेखा

अर्थशास्त्र प्राचीन भारत की बौद्धिक प्रतिभा के प्रमाण के रूप में खड़ा है, जो शासन, अर्थशास्त्र और रणनीति के लिए एक कालातीत मैनुअल पेश करता है। सिर्फ एक राजनीतिक मार्गदर्शक से कहीं अधिक, यह एक आदर्श राज्य की व्यापक दृष्टि बनाने के लिए शासन कला, सामाजिक कल्याण और व्यावहारिक ज्ञान के धागों को एक साथ बुनता है।

शासन के प्रति एक दूरदर्शी दृष्टिकोण

अर्थशास्त्र समाज की समृद्धि और सुरक्षा को सक्षम करने पर आधारित है। यह दो मूल सिद्धांतों पर जोर देता है—

1. **राज्य की सुरक्षा:** एक शासक को सक्षम प्रशासन के माध्यम से अपने राज्य की रक्षा करनी चाहिए।
2. **शक्ति का विस्तार:** रणनीतिक विजय और कूटनीति के माध्यम से नए क्षेत्रों को हासिल किया जा सकता है, जिससे विदेश नीति पर चर्चा का मार्ग प्रशस्त होगा।

इस दोहरे फोकस के माध्यम से, कौटिल्य ने एक ऐसा काम तैयार किया जो बाहरी ताकत के साथ-साथ आंतरिक सद्भाव के बारे में भी है।

कौटिल्य अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र का श्रेय कौटिल्य को दिया जाता है, जिन्हें चाणक्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है, जो शानदार रणनीतिकार और सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के सलाहकार थे। जबकि कौटिल्य की अंतर्दृष्टि गहन है, वह खुले तौर पर बृहस्पति और उसानास जैसे प्रारंभिक ऋषियों के योगदान को स्वीकार करते हैं। हालाँकि, उनकी प्रतिभा इन विचारों को संश्लेषित करने और उन्हें नए दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करने में निहित है जो अपने समय से सदियों आगे थे।

दिलचस्प बात यह है कि अर्थशास्त्र सदियों से इतिहास में खोया हुआ था और इसे 1905 में फिर से खोजा गया था। तब से, इसने न केवल अपने ऐतिहासिक मूल्य के लिए बल्कि अपनी स्थायी प्रासंगिकता के लिए विद्वानों और नीति निर्माताओं को समान रूप से आकर्षित किया है।

इस खजाने के अंदर क्या है?

अर्थशास्त्र 15 पुस्तकों में व्यवस्थित है (अधिकारण), प्रत्येक शासन कला के महत्वपूर्ण पहलुओं पर गहन जानकारी प्रदान करता है:

- **पुस्तकें 1-5:** भूमि प्रबंधन और शहरी नियोजन से लेकर आपराधिक कानून और न्याय तक, आंतरिक प्रशासन के सभी पहलुओं के बारे में बताती हैं।
- **पुस्तकें 6-13:** बाहरी संबंधों पर ध्यान केंद्रित करें, कूटनीति, क्षेत्रीय विस्तार और सैन्य अभियानों के लिए रणनीतियों के विवरण के बारे में बताती हैं।
- **पुस्तक 14:** दुश्मनों को खत्म करने और आंतरिक असंतोष को संबोधित करने के लिए गुप्त तरीके प्रदान करता है।
- **पुस्तक 15:** समस्या-समाधान और नीति-निर्माण के लिए 32 विश्लेषणात्मक तरीकों का परिचय देता है (तन्त्रयुक्ति)।

प्रत्येक अध्याय विस्तार से कौटिल्य के सूक्ष्म ध्यान को दर्शाता है, जो पाठ को नैतिक दर्शन और व्यावहारिक रणनीति का एक उल्लेखनीय संयोजन बनाता है।

एक राजा की शिक्षा के स्तंभ

कौटिल्य का मानना था कि एक शासक की सफलता ज्ञान की चार शाखाओं में महारत हासिल करने पर निर्भर करती है:

1. **तर्क एवं वितर्क (आन्वीक्षिकि):** सभी विज्ञानों की नींव, यह शासकों को तर्क करने, विश्लेषण करने और सूचित निर्णय लेने की क्षमता से सुसज्जित करती है। यह धर्म और अधर्म, लाभ और हानि और अच्छी और बुरी नीतियों के बीच अंतर करना सिखाता है।
2. **वेद (त्रयी):** धार्मिक ग्रंथों से अधिक, वेद सामाजिक भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ स्थापित करते हैं, व्यवस्था और सद्भाव के लिए एक रूपरेखा तैयार करते हैं।
3. **अर्थशास्त्र (वार्ता):** धन सृजन के लिए कृषि, पशुपालन और व्यापार महत्वपूर्ण हैं। एक समृद्ध अर्थव्यवस्था एक मजबूत खजाने का समर्थन करती है, जो बदले में एक शक्तिशाली सेना को बनाए रखती है और नागरिक कल्याण सुनिश्चित करती है।

4. **शासन (दण्डनीति):** कानून एवं व्यवस्था एक स्थिर समाज की रीढ़ है। प्रभावी शासन उत्पीड़न को रोकता है, प्रगति को बढ़ावा देता है, और कमजोर और मजबूत दोनों की सुरक्षा करता है।



कौटिल्य के राजा की शिक्षा के चार स्तंभ

प्रभाव की एक विरासत

अर्थशास्त्र ने केवल मौर्य साम्राज्य को आकार दिया बल्कि कामन्दक की नीतिशरा और सोमदेव का नीति-वाक्यमृत जैसे बाद के कार्यों को भी प्रेरित किया। इसका प्रभाव अभी भी नेतृत्व, सार्वजनिक प्रशासन और रणनीतिक योजना पर आधुनिक चर्चाओं में महसूस किया जा सकता है।

सदियों के बाद दोबारा खोजे गए इस प्राचीन ग्रंथ ने बार-बार अपनी प्रासंगिकता साबित की है। यह सिर्फ अतीत की एक खिड़की नहीं है, बल्कि सुशासन के शाश्वत सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है।

यह आज क्यों मायने रखता है

अर्थशास्त्र एक ऐतिहासिक दस्तावेज से कहीं अधिक है - यह शासन और नेतृत्व की जटिलताओं से निपटने के लिए एक जीवंत मार्गदर्शिका है। व्यावहारिक रणनीतियों के साथ नैतिक शासन का इसका मिश्रण ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो आधुनिक समय में भी गूँजती है। नीति-निर्माण से लेकर संघर्ष समाधान तक, कौटिल्य की बुद्धिमत्ता दुनिया भर के नेताओं को प्रेरित और मार्गदर्शन करती रहती है। तो, चाहे आप इतिहास के प्रति उत्साही हों, राजनीति विज्ञान के छात्र हों, या कालातीत रणनीतियों की तलाश करने वाले नेता हों, अर्थशास्त्र पेश करने के लिए कुछ गहरा है।

9. कौटिल्यन राज्य: प्रशासन का एक व्यावहारिक मॉडल

राज्य की उत्पत्ति या आदर्श शासन प्रणालियों पर बहस करने वाले काल्पनिक ग्रंथों के विपरीत, अर्थशास्त्र व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाता है। यह वास्तविक दुनिया के प्रशासन पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें विषयों और उनकी संपत्ति की रक्षा के लिए शासक के कर्तव्य पर जोर दिया जाता है। यह सुरक्षा धोखेबाज व्यापारियों और चोरों से लेकर बाढ़ और आग जैसी प्राकृतिक आपदाओं तक विभिन्न खतरों तक फैली हुई है।

पुस्तक 2, अध्याय 1 में, कौटिल्य ने बच्चों, बुजुर्गों, बीमारों और निराश्रितों जैसे कमजोर लोगों की देखभाल करने की राजा की जिम्मेदारी पर प्रकाश डाला है।

- **योग:** उद्देश्यों की प्राप्ति.
- **क्षेमा:** उन उपलब्धियों का शांतिपूर्ण आनंद.

साथ में, ये प्रजा की समृद्धि, कल्याण और खुशी सुनिश्चित करने के शासक के कर्तव्य को दर्शाते हैं। इसमें योग और क्षेम की दोहरी अवधारणाएं समाहित हैं—

कल्याण-केन्द्रित शासन व्यवस्था

कौटिल्य ने एक ऐसे सक्रिय राज्य की कल्पना की थी जो अपने लोगों के कल्याण में गहराई से निवेश करता हो। अर्थशास्त्र इस तरह की पहल की सिफारिश करता है:

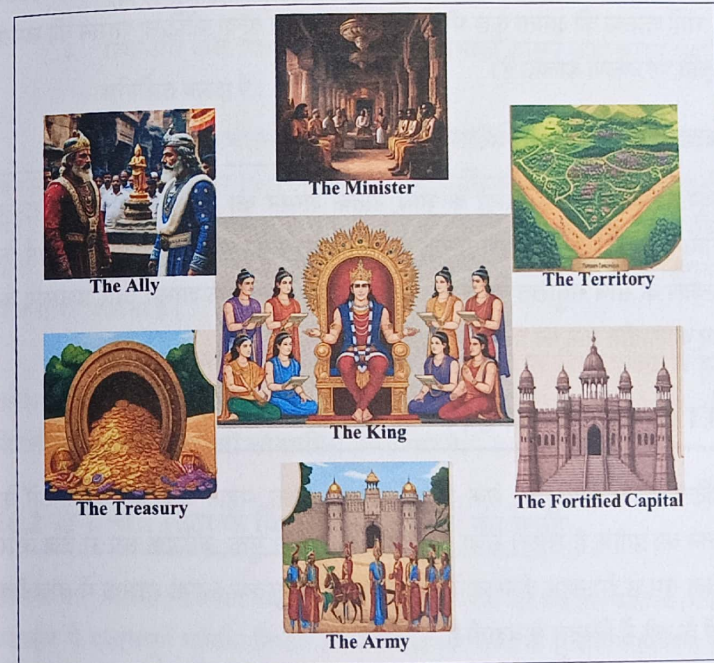
1. **बुनियादी ढाँचा विकास:** अछूती ज़मीनों को व्यवस्थित करना, बाँधों, टैंकों और सिंचाई प्रणालियों का निर्माण करना और सुरक्षित व्यापार मार्गों को सुनिश्चित करना।
2. **आर्थिक विनियमन:** वस्तुओं की बिक्री को नियंत्रित करना, निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को सुनिश्चित करना और शोषणकारी मुनाफाखोरी से बचना।
3. **आपदा प्रतिक्रिया:** प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों के लिए पिता की तरह कार्य करना, सहायता और सुरक्षा प्रदान करना।

कौटिल्य ने चेतावनी दी है कि नागरिकों के कल्याण पर ध्यान न देने से असंतोष और यहां तक कि विद्रोह भी हो सकता है। पाठ में ऐसे कृत्यों की गणना की गई है जो शासक को अपनी प्रजा से दूर कर सकते हैं, जो चेतावनीपूर्ण सलाह के रूप में कार्य करता है।

10. राज्य के सात तत्व: शासन की रूपरेखा

अर्थशास्त्र के छठे अध्याय में समांग या सात तत्वों (प्रकृतियों) का परिचय दिया गया है जो राज्य प्रशासन की नींव रखते हैं। प्रत्येक तत्व एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और सूची में पहले वाले तत्व उच्चतर प्राथमिकता वाले होते हैं—

1. **राजा (स्वामिन):** शासक और रक्षक, राज्य की स्थिरता के केंद्र में।
2. **मंत्री (अमात्य):** सलाहकार जो राजा के निर्णयों और नीतियों का मार्गदर्शन करते हैं।



राज्य के सात तत्व

3. **क्षेत्र (जनपद):** वह भूमि और उसकी प्रजा, जिस पर राजा शासन करता है।
4. **दृढ़ राजधानी (दुर्ग):** राज्य का प्रशासनिक और रक्षात्मक केंद्र।
5. **राजकोष (कोष):** वित्तीय रीढ़, राज्य की स्थिरता और विकास सुनिश्चित करना।

6. **सेना (दण्ड):** कानून को लागू करने वाला और क्षेत्र का रक्षक।
7. **सहयोगी (मित्र):** मित्रवत शासक जो राज्य की विदेश नीति को मजबूत करते हैं।

परस्पर जुड़ी प्राथमिकताएँ

इन तत्वों का क्रम शासक के साथ उनके सापेक्ष महत्व को दर्शाता है। हालाँकि, कौटिल्य स्वीकार करते हैं कि किसी एक तत्व में प्रतिकूलता दूसरों को बाधित कर सकती है। उदाहरण के लिए, खत्म हुआ खजाना या कमजोर सेना पूरे राज्य को अस्थिर कर सकती है, चाहे शासक की क्षमता कुछ भी हो। यह परस्पर जुड़ा ढाँचा कौटिल्य शासन की समग्र प्रकृति पर प्रकाश डालता है।

व्यावहारिक बुद्धि की विरासत

अर्थशास्त्र व्यावहारिक उपायों के साथ नैतिक शासन का संयोजन करते हुए, राज्य प्रशासन का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। राज्य की जरूरतों को अपने लोगों के कल्याण के साथ संतुलित करके, कौटिल्य की दृष्टि आधुनिक शासन और प्रशासन के लिए कालातीत ज्ञान का प्रतीक बनी हुई है।

10.1 राजा: शासन का हृदय

कौटिल्य शास्त्र के अनुसार, एक आदर्श शासक ताकत, महान जन्म और शिक्षाओं के पालन का प्रतीक है शास्त्र। राजा को शारीरिक रोगों से मुक्त, बौद्धिक रूप से तेज और नैतिक रूप से ईमानदार होना चाहिए। अर्थशास्त्र की पुस्तक 6 एक शासक में वांछनीय गुणों के बारे में विस्तार से बताती है—

- **प्रेरणादायक गुण:** आत्मविश्वास को प्रेरित करने और सुलभता को बढ़ावा देने के लिए बड़प्पन, धर्मपरायणता और सच्चाई।
- **बौद्धिक कुशाग्रता:** विचारों की स्पष्टता और जटिल मुद्दों को समझने की क्षमता।
- **चरित्र की ताकत:** बहादुरी, निर्णायकता और लचीलापन।

चूँकि सभी शासक इन गुणों के साथ पैदा नहीं होते हैं, कौटिल्य चार महत्वपूर्ण विषयों में व्यवस्थित प्रशिक्षण पर जोर देते हैं:

1. **दार्शनिक पूछताछ (आन्वीक्षिकि):** समभाव और जीवन के प्रति व्यापक दृष्टिकोण विकसित करता है।
2. **वैदिक विद्या (त्रयी):** सामाजिक प्रणालियों और परंपराओं की समझ को बढ़ाता है।
3. **अर्थशास्त्र (वार्ता):** शासक को राज्य की अर्थव्यवस्था को प्रबंधित करने के ज्ञान से सुसज्जित करता है।
4. **राजनीति और प्रशासन (दण्डनीति):** प्रभावी शासन और कानून प्रवर्तन सुनिश्चित करता है।

इसके अतिरिक्त, अर्थशास्त्र राजा के लिए एक संरचित दैनिक कार्यक्रम निर्धारित करता है (पुस्तक 1, अध्याय 19 में उल्लिखित)। यह व्यक्तिगत जरूरतों के लिए साढ़े दस घंटे आवंटित करता है, जिसमें साढ़े चार घंटे की नींद शामिल है, और शेष प्रशासनिक कार्यों के लिए आवंटित करता है, जो प्रभावी शासन के लिए आवश्यक सावधानीपूर्वक योजना को दर्शाता है।

मनुस्मृति के अध्याय 7 में राजधर्म (राजा के कर्तव्य) पर विस्तृत चर्चा में इसी प्रकार की भावनाएँ प्रतिध्वनित होती हैं, जिसमें मंत्रियों की नियुक्ति, लोक कल्याण और विदेशी मामलों जैसे पहलुओं को शामिल किया गया है।

10.2 अमात्य:: राजा के विश्वसनीय साथियों का समूह

शासक चाहे कितना भी सक्षम क्यों न हो, अकेले शासन नहीं कर सकता। **अमात्य** (मंत्री) प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सलाहकार राज्य के सुचारू कामकाज को सुनिश्चित करते हुए निर्णय-निर्माता और कार्यान्वयनकर्ता दोनों के रूप में कार्य करते हैं।

भूमिकाएँ और पदानुक्रम

- **मंत्री:** सर्वोच्च सलाहकार, गोपनीय परामर्श के लिए जिम्मेदार।
- **अमात्य:** कर संग्रह, दंड और क्षेत्रीय विकास जैसे प्रशासनिक कर्तव्यों को निष्पादित करने वाले उच्च-स्तरीय अधिकारी।

कौटिल्य दोनों में अंतर बताते हैं: केवल कठोर गुप्त परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने वाले ही मंत्री बनने के पात्र होते हैं। वहीं, अमात्य की योग्यताएँ थोड़ी कम होती हैं।

परिषद की संरचना: कौटिल्य तीन से चार मंत्री रखने की सलाह देते हैं, क्योंकि छोटी संख्या दक्षता और गोपनीयता सुनिश्चित करती है, जबकि बड़ा समूह कलह का जोखिम उठाता है। व्यापक परामर्श के लिए 12-20 सदस्यों की (परिषद) मंत्री परिषद राजा का समर्थन करती है, विशेषकर आपात स्थिति के दौरान।

अर्थशास्त्र राजा और उसकी परिषद के बीच संतुलन के महत्व को रेखांकित करता है, इस बात पर प्रकाश डालता है कि सुशासन सामूहिक ज्ञान पर निर्भर करता है।

10.3 बस्तियाँ एवं भूमि उपयोग (जनपद)

जनपद (क्षेत्र और उसके लोग) राज्य की आर्थिक रीढ़ बनते हैं। एक राजा की शक्ति उसकी प्रजा की समृद्धि के साथ बढ़ती है, जिससे भूमि प्रबंधन सार्वजनिक प्रशासन की आधारशिला बन जाता है।

प्रमुख भूमि उपयोग गतिविधियाँ

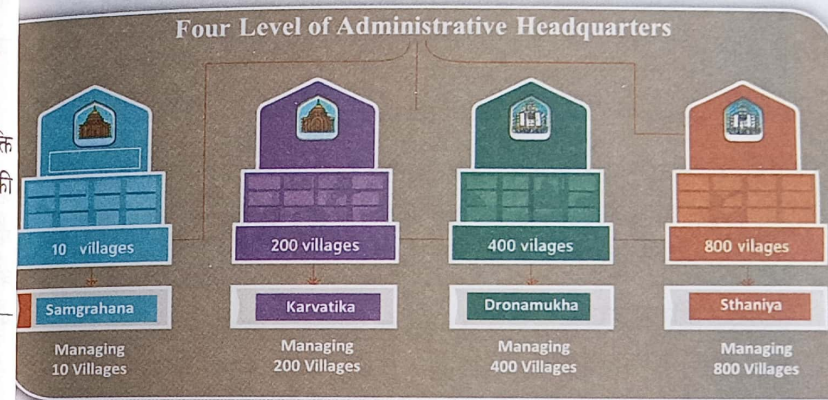
1. सुरक्षा के लिए किले बनाना
2. कृषि को बनाए रखने के लिए सिंचाई प्रणालियों का विकास करना।
3. आर्थिक विकास के लिए व्यापार मार्गों की स्थापना करना।
4. धातुओं और रत्नों जैसे संसाधनों के लिए खदानों का प्रबंधन करना।
5. इमारती लकड़ी और हाथियों के लिए वनों की रक्षा करना।

उचित भूमि उपयोग नियोजन में बस्तियों का आयोजन भी शामिल है। अर्थशास्त्र में 100-500 परिवारों वाले गाँव बनाने का प्रस्ताव है, जिसमें कृषकों को बसने वालों के रूप में प्राथमिकता दी गई है। समग्र विकास सुनिश्चित करने के लिए ब्राह्मणों, शिक्षकों, डॉक्टरों और अन्य प्रमुख पेशेवरों को भी भूमि आवंटित की गई।

प्रशासनिक प्रभाग: कुशल शासन के लिए राज्य को श्रेणीबद्ध इकाइयों में विभाजित किया गया था—

- **संग्रहणा:** 10 गाँवों का मुख्यालय।
- **कर्वाटिक:** 200 गाँवों का जिला मुख्यालय।

- **द्रोणमुख:** 400 गाँवों का संभागीय मुख्यालय।
- **स्थानिय:** 800 गाँवों का प्रांतीय मुख्यालय।
- **किलेबंदी और रक्षा:** आक्रमणों से बचाव के लिए, अर्थशास्त्र चार सीमावर्ती किलों (प्रत्येक दिशा में एक), रणनीतिक रूप से स्थित और प्राकृतिक रूप से मजबूत (उदाहरण के लिए, पहाड़ों या नदियों पर) की सिफारिश करता है। आठ प्रकार के किलों की पहचान की गई है, जिनमें पहाड़ी किले सबसे सुरक्षित और भूमि किले सबसे कम सुरक्षित हैं।



प्रशासनिक प्रभाग

सतत शासन के लिए एक दृष्टिकोण

अर्थशास्त्र नेतृत्व, प्रशासन और भूमि प्रबंधन की परस्पर निर्भरता पर जोर देते हुए शासन के लिए एक व्यापक खाका प्रदान करता है। अपने नागरिकों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करके, राज्य न केवल समृद्धि सुनिश्चित करता है बल्कि अपनी स्थिरता और विकास भी सुनिश्चित करता है।

10.4 दृढ़ राजधानी शहर (दुर्ग)

अर्थशास्त्र शासन के लिए एक व्यापक खाका प्रस्तुत करता है, जिसमें नेतृत्व, प्रशासन और भूमि प्रबंधन की परस्पर निर्भरता पर जोर दिया गया है। अपने नागरिकों के कल्याण

पर ध्यान केंद्रित करके, राज्य न केवल समृद्धि सुनिश्चित करता है, बल्कि अपनी स्थिरता और विकास भी सुनिश्चित करता है—

भूमिका और रणनीतिक महत्व

1. राजा और नागरिकों की सुरक्षा

- दुर्ग को राजा की रक्षा करने और आक्रमण के दौरान नागरिकों को शरण प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- यह राजा और उसके सलाहकारों को बातचीत करने, रणनीति बनाने और दुश्मन की बढ़त को पीछे हटाने की अनुमति देता है, जिससे खतरों को कम करने के लिए महत्वपूर्ण समय मिलता है।

2. रक्षा तंत्र:

- गढ़वाले शहर आक्रामक और रक्षात्मक दोनों क्षमताएं प्रदान करते हैं, जिससे सेना को आवश्यकतानुसार घुसपैठियों पर पलटवार करने या बचाव करने में मदद मिलती है।

डिज़ाइन और लेआउट

1. आसपास की खाइयाँ

- शहर के निकट आने पर शहर तीन खाइयों से घिरा हुआ है, जिनकी चौड़ाई बढ़ती जा रही है, जिन्हें इस प्रकार डिज़ाइन किया गया है
 - प्राकृतिक या कृत्रिम जल निकाय।
 - अतिरिक्त सुरक्षा के लिए कमल के पौधे और मगरमच्छ।
 - पर्याप्त जल निकासी व्यवस्था
 - खाइयों को 6 फुट के अंतराल से अलग किया जाता है।

2. प्राचीर और दीवारें

- प्राचीर कटीली झाड़ियों और 18 से 36 फुट ऊंची पैरापेट दीवारों से किलेबंद हैं।
- इनमें सैनिकों के लिए भागने और बाहर निकलने के दरवाजे और आपात स्थिति में गुप्त रास्तों के प्रावधान शामिल हैं।

3. प्रवेशद्वार और मीनारें

- प्रवेशद्वार में सीमा पर गश्त के लिए हॉल, कुएं और चौकियों के साथ टॉवर हैं।

- हाथियों के हमले का विरोध करने के लिए मुख्य और साइड के दरवाजों को मजबूत किया गया है।
- प्रतिबंधित पहुंच सुनिश्चित करने के लिए खंदकों पर बने पुल हटाने योग्य प्रकार के हैं।

4. रक्षात्मक संरचनाएँ

- दुश्मन की प्रगति को विलंबित करने के लिए स्पीड ब्रेकर, गुम जाल और पैरापेट रणनीतिक रूप से लगाए गए हैं।

संसाधन और आत्मनिर्भरता

1. लंबी घेराबंदी के लिए प्रावधान

- अनाज, तेल, नमक, दवाइयाँ, हथियार और चारा जैसी आपूर्तियाँ एक वर्ष से अधिक समय तक चलने के लिए संग्रहीत की जाती हैं।
 - प्रत्येक परिवार को भंडारण और बुनियादी जरूरतों के लिए पर्याप्त भूमि आवंटित की जाती है।

2. सैन्य तैयारी

- विश्वासघात या मिलीभगत को रोकने के लिए सेना को कई प्रमुखों के अधीन इकाइयों (हाथी, रथ, घुड़सवार सेना, पैदल सेना) में विभाजित किया गया है।

10.5 राजकोष और राज्य अर्थव्यवस्था (कोष)

अर्थशास्त्र राज्य की अर्थव्यवस्था और रक्षा की रीढ़ के रूप में एक सुव्यवस्थित कोष (कोष) के महत्व पर जोर देता है। इसमें कहा गया है कि सेना की तुलना में राजकोष अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि सेना अपने निर्वाह और विकास के लिए राजकोष पर निर्भर रहती है।

राज्य के राजस्व के स्रोत

राज्य में राजस्व को कई धाराओं में वर्गीकृत किया गया है, जिसमें कर, शुल्क और राज्य उद्यमों से मुनाफा शामिल है। प्रमुख स्रोत हैं:

1. कृषि

- कृषि उपज का छठा हिस्सा कर के रूप में एकत्र किया जाता है (Bhaga).

- पानी के उपयोग के लिए अतिरिक्त कर लगाया जाता है, जो उपज के पांचवें हिस्से से लेकर एक तिहाई तक होता है।
- व्यापार और वाणिज्य**
 - आयात और निर्यात शुल्क।
 - ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच माल ले जाने पर उत्पाद शुल्क।
 - खान और विनिर्माण**
 - राजस्व में रॉयल्टी, विनिर्माण शुल्क और राज्य के एकाधिकार के उल्लंघन के लिए जुर्माना शामिल है।
 - श्रम योगदान**
 - विषय राज्य उद्यमों को उनके बकाया के हिस्से के रूप में श्रम प्रदान करते हैं।

व्यय एवं आर्थिक नियंत्रण

1. खर्च

- राजकोष महल के खर्च, सैन्य रखरखाव और अन्य प्रशासनिक लागतों को निधि देता है।

2. बफर स्टॉक

- राज्य कीमतों को स्थिर करने और कमी को रोकने के लिए बफर स्टॉक रखता है, फसल के दौरान अधिशेष माल खरीदता है और कमी के दौरान बेचता है।

3. राजस्व प्रशासन

- राज्य के अधिकारियों की देखरेख में करों की सावधानीपूर्वक गणना और वसूली की जाती है। *अर्थशास्त्र* में कराधान और शुल्कों से संबंधित शर्तों की एक विस्तृत शब्दावली प्रदान की गई है।

मजबूत राजकोष का महत्व

- भरपूर खजाना युद्धों या संकटों के दौरान लचीलापन सुनिश्चित करता है।
- पूर्ति के उपायों में कर वृद्धि, ऋण प्राप्त करना, या शत्रु के संसाधनों को ज़ब्त करना शामिल हैं, जिनका विवरण *अर्थशास्त्र* के अध्याय 5.2 में दिया गया है।

तालिका 2: करों, शुल्कों और अन्य शुल्कों से संबंधित शब्दों की शब्दावली (*अर्थशास्त्र*).

क्र.सं.	वर्ग	प्रकार	विवरण
1	कर	सीमा शुल्क (शुल्क)	- आयात शुल्क (प्रवेश्य) - निर्यात शुल्क (निष्क्रम्य) - अनुदान/टोल (द्वार-बहिरिकाद्य)
2		लेनदेन कर (ब्याजी)	- बिक्री या लेनदेन पर कर.
		क्राउन गुड्स के लिए लेनदेन कर	- शाही या राज्य के स्वामित्व वाली वस्तुओं से जुड़े लेनदेन पर कर (मानव्यजी).
3		उत्पादन का हिस्सा (भाग)	- 1/6वाँ हिस्सा उत्पादन का (सद्भाग) कर के रूप में एकत्र किया गया।
4	नकद और वस्तु	नकद में कर (कर)	- राज्य द्वारा वसूला जाने वाला मौद्रिक कर।
		वस्तु के रूप में कर (प्रतिकर)	- वस्तुओं या सेवाओं पर चुकाया गया कर।
		श्रम योगदान (विष्टि)	- राज्य उद्यमों को प्रदान किए गए श्रम के रूप में कर।
		सैनिकों की आपूर्ति (आयुधिय)	- राज्य की सेना के लिए सैनिक उपलब्ध कराने का दायित्व.
5	मिश्रित	प्रतिकारी कर्तव्य (वैधरण)	- व्यापार असमानताओं को संतुलित करने के लिए कर।
		सड़क उपकर (वर्तनी)	- सड़क रखरखाव के लिए लेवी.
		रॉयल्टी (प्रक्रिया)	- संसाधन निष्कर्षण के लिए शुल्क, जैसे खदानें या वन उपज।
		एकाधिकार कर (परिधि)	- राज्य या निजी एकाधिकार पर कर.
		वस्तु के रूप में ग्रामीण कर (पिंडकर)	- सामान में किया गया भुगतान, आमतौर पर ग्रामीण आबादी द्वारा।

क्र.सं.	वर्ग	प्रकार	विवरण
		सेना रखरखाव कर (सेनाभक्त)	- सैन्य व्यय का समर्थन करने के लिए लगाया गया।
		अधिभार (पार्श्व)	- विशिष्ट लेनदेन या सामान पर अतिरिक्त शुल्क।
6	शुल्क और सेवाएँ	वजन और माप (पौतव)	- बाट और माप को मानकीकृत और प्रमाणित करने के लिए शुल्क।
		पासपोर्ट शुल्क (मुद्र)	- यात्रा परमिट जारी करने के लिए शुल्क।
		नौका शुल्क (तर)	- नौका उपयोग के लिए शुल्क।
		आंशिक बकाया (पत्थन)	- वस्तुओं या सेवाओं के आंशिक उपयोग के लिए भुगतान।
		सिक्का शुल्क (रूपिक)	- मुद्रा ढालने का शुल्क।
		भूमि सर्वेक्षण शुल्क (रज्जु)	- भूमि के सर्वेक्षण और सीमांकन के लिए शुल्क।
		परीक्षण शुल्क (परिक्षिका)	- माल की गुणवत्ता या प्रामाणिकता के परीक्षण के लिए शुल्क।
		एस्कॉर्ट शुल्क (अत्याहिक)	- यात्रा के दौरान आधिकारिक सुरक्षा या अनुरक्षण प्रदान करने के लिए शुल्क।
		नियत शुल्क (किस)	- विशिष्ट राज्य सेवाओं या लेनदेन के लिए मानक शुल्क।

10.6. कानून एवं व्यवस्था एवं सुरक्षा (दण्ड)

अर्थशास्त्र में, "योग-क्षेम" शब्द राजा के एक आवश्यक कर्तव्य का वर्णन करता है। योग का तात्पर्य उद्देश्यों की सफल प्राप्ति से है, जबकि क्षेम का अर्थ समृद्धि का शांतिपूर्ण आनंद है। ये दोनों मिलकर राज्य की प्रजा के कल्याण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो तब प्राप्त होता

है जब व्यक्ति अपने जीवन और संपत्ति में सुरक्षित रहते हैं। चोरों, लुटेरों, भ्रष्ट अधिकारियों या धोखेबाज व्यापारियों द्वारा उत्पन्न इस शांति भंग को दंड, राज्य की दमनकारी शक्ति द्वारा संबोधित किया जाता है। आंतरिक प्रशासन के संबंध में राजा के कर्तव्य तीन मुख्य क्षेत्रों पर केंद्रित हैं: राज्य को बाहरी खतरों से बचाना, कानून और व्यवस्था बनाए रखना और नागरिकों का कल्याण सुनिश्चित करना। दंड की अवधारणा न्याय और सामाजिक व्यवस्था सुनिश्चित करके इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में केंद्रीय भूमिका निभाती है।

दण्ड की भूमिका

जबकि दंड राज्य की दमनकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, इसका उपयोग सावधानी से किया जाना चाहिए। अर्थशास्त्र में चेतावनी दी गई है कि इस शक्ति के अनुचित उपयोग से प्रजा में असंतोष पैदा हो सकता है, जिससे संभावित रूप से विद्रोह हो सकता है। इसलिए राजा को उन दुर्व्यवहारों से बचना चाहिए जिनके परिणामस्वरूप राजशाही के खिलाफ विद्रोह या हिंसा हो सकती है। कई कार्रवाइयाँ, जैसे अत्यधिक कराधान, कठोर दंड, या अन्यायपूर्ण शासन, इस तरह के असंतोष को जन्म दे सकती हैं।

अर्थशास्त्र में कानून और न्याय की संरचना

कानून और न्याय प्रशासन की संरचना अर्थशास्त्र पदानुक्रमित है, जिसकी अंतिम जिम्मेदारी राजा की होती है। राजा को समय-समय पर नागरिकों से मिलकर उनकी शिकायतें सुननी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि न्याय मिल रहा है। यह शासन की एक अनूठी विशेषता है, क्योंकि यह शासक तक सीधी पहुंच की अनुमति देता है।

कानूनी प्रणाली को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

1. **नागरिक संघर्ष:** धर्मस्थ के रूप में जाने जाने वाले न्यायाधीशों के एक निकाय द्वारा संबोधित किया जाता है, जो व्यक्तियों के बीच विवादों को संभालते हैं।
2. **अपराध:** शहरी क्षेत्रों के लिए नगर अधीक्षक और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कुलाधिपति द्वारा संबोधित किया जाता है, जो चोरी, धोखाधड़ी और डकैती जैसे अपराधों से निपटते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में न्याय व्यवस्था विकेन्द्रीकृत है, जहाँ सीमावर्ती चौकियों, उप-जिलाओं और प्रांतीय मुख्यालयों जैसे विभिन्न स्तरों पर न्यायालय स्थापित हैं। प्रत्येक न्यायालय में

तीन न्यायाधीशों का एक पैनल होता है। इन न्यायाधीशों, या धर्मस्थों, से धर्म के सिद्धांतों का पालन करने और निष्पक्ष एवं न्यायपूर्ण निर्णय सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है। प्रदेश (मजिस्ट्रेट) आपराधिक मामलों के लिए ज़िम्मेदार थे, जबकि न्यायाधीश दीवानी विवादों का निपटारा करते थे।

न्यायिक प्रणाली और व्यावसायिक निगरानी

अर्थशास्त्र के अंतर्गत कारीगरों और व्यापारियों की भूमिका को विनियमित किया गया है, जहाँ धोखाधड़ी को रोकने के उपाय प्रस्तावित हैं। बुनकरों और लोहारों जैसे कारीगरों को माल की गलत डिलीवरी, अत्यधिक शुल्क वसूलने या सामग्री हड़पने जैसी कुप्रथाओं को रोकने के लिए विनियमित किया गया है। इसी प्रकार, मिलावट, गलत तौल या मूल्य हेरफेर जैसी धोखाधड़ी को रोकने के लिए व्यापारियों पर नज़र रखी जाती है। व्यापारियों और बाज़ारों की गतिविधियों की निगरानी के लिए विशेष अधिकारियों को नियुक्त किया गया था, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि जनता को शोषण से बचाया जाए।

भ्रष्टाचार से सुरक्षा

यह ग्रंथ भ्रष्टाचार, विशेष रूप से अधिकारियों और न्यायिक अधिकारियों के बीच, पर भी प्रकाश डालता है। इसमें विभागाध्यक्षों और न्यायिक अधिकारियों सहित 13 प्रकार के व्यक्तियों की सूची दी गई है, जो रिश्ततखोरी या जबर्न वसूली के लिए प्रवृत्त हो सकते हैं। अर्थशास्त्र प्रशासन की अखंडता को बनाए रखने के लिए जाल बिछाकर और निगरानी का उपयोग करके इन भ्रष्ट व्यक्तियों को पकड़ने के तरीकों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

10.7. कानूनी ढाँचा और न्याय के स्रोत

कानूनी व्यवस्था में अर्थशास्त्र न्याय के चार मुख्य स्रोतों पर आधारित है—

1. धर्म (कानून),
2. गवाहों की गवाही,
3. लोगों द्वारा स्वीकृत परंपरा, और
4. पिछले निर्णयों द्वारा स्थापित मिसालें।

ये सिद्धांत राज्य की न्याय व्यवस्था की नींव रखते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि कानूनों का निष्पक्ष और सुसंगत रूप से पालन हो।

अर्थशास्त्र में, कानून और व्यवस्था (दंड) के प्रशासन को शासन के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह केवल दंड का साधन नहीं है, बल्कि सामाजिक स्थिरता बनाए रखने और नागरिकों के कल्याण की रक्षा सुनिश्चित करने का एक साधन है। न्याय व्यवस्था, निष्पक्षता, पारदर्शिता और व्यवसायों के नियमन पर जोर देते हुए, राज्य को आंतरिक विवादों से बचाने और शासक और शासित के बीच सामंजस्य बनाए रखने के लिए बनाई गई है।

10.8. विदेश नीति एवं सहयोगी (मित्र)

कौटिल्य का अर्थशास्त्र विदेश नीति के लिए एक विस्तृत रूपरेखा प्रदान करता है, जो पड़ोसी राज्यों के बीच संबंधों और राज्यों के एक समूह में सत्ता की गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करता है। इस अवधारणा को पुस्तक 6, 7, 11 और 12 में उल्लिखित किया गया है, पुस्तक 6 के अध्याय 2 में स्थापित मार्गदर्शक सिद्धांतों के साथ। कौटिल्य के अनुसार, किसी राज्य की विदेश नीति मूल रूप से उसके छह मूलभूत तत्वों की आंतरिक ताकत से प्रभावित होती है (सादंग)। जब ये तत्व स्थिर और मजबूत होंगे तभी कोई राज्य प्रभावी विदेशी संबंधों को आगे बढ़ा सकता है।

विदेश नीति के मूल तत्व

अर्थशास्त्र इस बात पर जोर देता है कि राजा की शक्ति—जो राज्य की आंतरिक स्थिति से निर्धारित होती है—उसकी विदेश नीति के विकल्पों को आकार देती है। राजाओं के बीच संबंध तीन संभावित शक्ति समीकरणों द्वारा निर्देशित होते हैं:

1. समान शक्ति: जहां दोनों राजा समान शक्ति वाले हों।
2. मजबूत: जहां दीक्षा लेने वाला राजा अधिक शक्तिशाली होता है।
3. कमजोर: जहां आरंभ करने वाला राजा कम शक्तिशाली हो।

ये परिदृश्य पड़ोसी राज्यों से निपटने के लिए सहयोगियों और रणनीतियों की पसंद को निर्धारित करते हैं।

विदेश नीति के छह तरीके

अर्थशास्त्र में कूटनीति और युद्ध में संलग्न होने के लिए छह विधियों (षड्गुण्य) की रूपरेखा दी गई है, जिनका वर्णन पुस्तक 7, अध्याय 1 में किया गया है:

1. संधि (शांति की नीति)

- संघर्षों से बचने की शर्तों के साथ संधियाँ या समझौते करना।
- आंतरिक स्थिरता को बढ़ावा देने या गठबंधन बनाने के लिए उपयोगी।

2. विग्रह (आश्वस्तता):

- शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण, जैसे खुले तौर पर या गुप्त रूप से युद्ध छेड़ना।
- प्रतिद्वंद्वी को कमजोर करने के लिए कूटनीतिक हमले शामिल हो सकते हैं।

3. आसन (तटस्थता या निष्क्रियता):

- चुप रहना और तत्काल कार्रवाई से बचना।
- स्थिति का आकलन करने या ताकत हासिल करने के लिए अक्सर एक अस्थायी रणनीति।

4. याना (युद्ध की तैयारी):

- प्रतिद्वंद्वी के कमजोर होने या आंतरिक चुनौतियों का सामना करने की प्रतीक्षा करते हुए युद्ध की तैयारी करना।
- अपनी ताकतों को मजबूत करने के लिए समय मिलता है।

5. समरया (आश्रय की तलाश):

- खतरे में होने पर किसी किले में शरण लेना या किसी मजबूत राजा से सुरक्षा की मांग करना।

6. द्वैधिभाव (द्वैति नीति):

- इसके साथ ही एक राजा के साथ शांति (संधि) का पालन करते हुए दूसरे के साथ शत्रुता (विग्रह) में संलग्न होना।
- एक साथ कई रिश्तों को प्रबंधित करने का एक रणनीतिक तरीका।

रणनीतिक निहितार्थ

- संधि की सलाह तब दी जाती है जब राजा शत्रु से कमजोर होता है, क्योंकि उसे आंतरिक रूप से मजबूत होने या बाहरी सहयोगियों की तलाश करने के लिए समय मिलता है।
- विग्रह तब उपयुक्त होता है जब राजा शत्रु से अधिक शक्तिशाली हो, जिससे अधिक आक्रामक रुख संभव हो सके।

- आसन और याना शांति और युद्ध के बीच संक्रमणकालीन चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो रणनीतियों के पुनर्मूल्यांकन या पुनर्निर्देशन के अवसर प्रदान करते हैं।
- संश्रय भारी खतरों के सामने जीवित रहने के लिए रक्षात्मक दृष्टिकोण के रूप में कार्य करता है।
- द्वैधिभाव एक जटिल रणनीति है जिसमें शांति और शत्रुता को एक साथ संतुलित करने के लिए सावधानीपूर्वक कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है।

व्यावहारिक विचार

सैन्य अभियान शुरू करने के निर्णय में महत्वपूर्ण संसाधन जुटाना, राजधानी से लंबे समय तक अनुपस्थित रहना और वाइसराय को सत्ता सौंपने से जुड़े जोखिम शामिल हैं। इस प्रकार, रुकने की रणनीति (आसन या याना) युद्ध की घोषणा के बाद व्यावहारिक महत्व रखता है, जिससे राज्य को अपनी स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करने या अपनी रणनीति को समायोजित करने की अनुमति मिलती है।

11. प्रशासनिक व्यवस्था

कौटिल्य का अर्थशास्त्र एक उच्च संगठित प्रशासनिक प्रणाली की कल्पना करता है, जो व्यापक राज्य नियंत्रण को लागू करने के लिए महत्वपूर्ण है जिसकी वह वकालत करता है। यह सेटअप कुशल शासन, मजबूत राज्य तंत्र और आंतरिक और बाहरी दोनों चुनौतियों का प्रबंधन करने की क्षमता पर जोर देता है। प्रशासनिक संरचना को मोटे तौर पर छह प्रमुख घटकों में वर्गीकृत किया जा सकता है: राजा और उसका मंत्रिमंडल, महल प्रशासन, रक्षा, खजाना, राजस्व एवं कानून एवं व्यवस्था, और नागरिक प्रशासन। प्रत्येक घटक की अलग-अलग जिम्मेदारियाँ होती हैं, जो शासन कार्यों का निर्बाध एकीकरण सुनिश्चित करती हैं।

1. राजा और उसका मंत्रिमंडल

प्रशासनिक ढांचे के शीर्ष पर राजा होता है, जो व्यक्तियों के एक समूह से घिरा होता है जो औपचारिक और अनौपचारिक रूप से उसका समर्थन करते हैं। राजा सभी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं के केंद्र में होता है और राज्य के शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

राजा का निकटतम परिवार, जिसमें मुख्य रानी, अन्य रानियाँ, युवराज, अन्य राजकुमार और रानी की माँ, शाही परिवार बनाते हैं। उनके साथ जैसे विश्वसनीय निजी सलाहकार भी हैं आचार्य (मुख्य शिक्षक), पुरोहित (पारिवारिक पुजारी), और ऋत्विज (अनुष्ठानों के लिए कार्यवाहक पुजारी)। यह आंतरिक चक्र राजा को आध्यात्मिक, नैतिक और रणनीतिक मार्गदर्शन प्रदान करता है। अन्य सदस्य जैसे शाही शास्त्री, दरबारी भविष्यवक्ता और ज्योतिषी भी राज्यकला और शगुन सहित विभिन्न मामलों पर अपनी विशेषज्ञता प्रदान करके योगदान देते हैं।

राजा के मंत्रियों का मंत्रिमंडल औपचारिक सलाहकार निकाय का गठन करता है। ये मंत्री विभिन्न प्रशासनिक डोमेन का प्रतिनिधित्व करते हैं और नीति निर्माण, कार्यान्वयन और निष्पादन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में राजा की सहायता करते हैं। वे निर्णय लेने के लिए महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि राज्य कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से संचालित होता है।

2. महल प्रशासन

महल प्रशासन शाही घराने के कामकाज और राजा के निजी जीवन से संबंधित सभी मामलों का प्रबंधन करता है। इसमें महल के संचालन का रखरखाव, राजा का कार्यक्रम और उसकी व्यक्तिगत सुरक्षा शामिल है।

महल परिचारकों का प्रमुख महल के भीतर दिन-प्रतिदिन के मामलों की देखरेख करता है, और यह सुनिश्चित करता है कि शाही परिवार की सभी घरेलू और प्रशासनिक जरूरतें पूरी हों। इसके साथ ही, पैलेस गार्ड्स का प्रमुख राजा और शाही परिवार की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होता है। ये भूमिकाएँ महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि महल न केवल राजा के निवास के रूप में बल्कि राज्य के शासन के मुख्य केंद्र के रूप में भी कार्य करता है।

3. रक्षा

रक्षा तंत्र प्रशासन के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक है, जिसका काम राज्य को बाहरी खतरों से बचाना, आंतरिक स्थिरता बनाए रखना और क्षेत्रीय सीमाओं का विस्तार करना है। सशस्त्र बलों के प्रमुख (कमांडर) सर्वोच्च रैंकिंग अधिकारी है, जो सीधे तौर पर सेना के लिए जिम्मेदार है।

सशस्त्र बलों को चार मुख्य प्रभागों में विभाजित किया गया है: पैदल सेना, रथ, घुड़सवार सेना और हाथी। प्रत्येक प्रभाग युद्ध में एक अद्वितीय भूमिका निभाता है, और

उनका समन्वय राज्य की सैन्य ताकत सुनिश्चित करता है। युवराज अक्सर सैन्य अभियानों में भाग लेता है, या तो अभियानों का नेतृत्व करता है या आंतरिक विद्रोहों को संबोधित करता है, जो राज्य की रक्षा में शाही परिवार की भागीदारी को रेखांकित करता है।

4. राजकोष

राजकोष राज्य की रीढ़ है, क्योंकि यह सभी प्रकार के राजस्व और संसाधनों का प्रबंधन करता है। कर और राजस्व अक्सर वस्तुओं के रूप में एकत्र किए जाते हैं, जिनमें अनाज, रत्न, तेल और शस्त्रागार जैसी वस्तुएँ शामिल होती हैं। खजाना न केवल धन के भंडार के रूप में कार्य करता है, बल्कि अकाल, युद्ध या प्राकृतिक आपदाओं जैसे संकटों से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण भंडार के रूप में भी कार्य करता है।



राजा का प्रशासन और कर्तव्य

कोषाध्यक्ष (सन्निधात्र), सीधे राजा को रिपोर्ट करने वाला एक वरिष्ठ अधिकारी, इस विभाग की देखरेख करता है। उन्हें राज्य संसाधनों के संग्रह, भंडारण और सुरक्षा के लिए जिम्मेदार अधिकारियों के एक नेटवर्क द्वारा समर्थित किया जाता है। नागरिकों के कल्याण और राज्य के वित्तीय स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए राजकोष की स्थिरता महत्वपूर्ण है।

5. राजस्व एवं कानून व्यवस्था

यह घटक वित्तीय नियोजन को आंतरिक सुरक्षा बनाए रखने के साथ जोड़ता है। चांसलर (समाहर्तृ) इस विभाग का प्रमुख होता है, वित्त मंत्री और ग्रामीण इलाकों के मुख्य प्रशासक के रूप में कार्य करता है।

वित्तीय मोर्चे पर, चांसलर वार्षिक बजट तैयार करता है, राजस्व लक्ष्य निर्धारित करता है और संग्रह की निगरानी करता है। प्रशासनिक दक्षता के लिए, ग्रामीण इलाकों को चार प्रभागों में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक का प्रबंधन स्थानिक नामक एक अधिकारी द्वारा किया जाता है। उनके नीचे, गोप नामक कनिष्ठ अधिकारी गांवों के छोटे समूहों की देखरेख करते हैं। यह पदानुक्रमित संरचना चांसलर को वित्तीय और प्रशासनिक योजना के लिए आवश्यक जानकारी एकत्र करने में सक्षम बनाती है।

कानून-व्यवस्था के पहलू में शांति बनाए रखना और आंतरिक खतरों से निपटना शामिल है। चांसलर असामाजिक तत्वों, व्यापारियों, लुटेरों और दुश्मन एजेंटों पर नजर रखने के लिए मुखबिरों के एक नेटवर्क पर निर्भर करता है। किलेबंद राजधानी शहर में, ये जिम्मेदारियां सिटी गवर्नर-जनरल (नागरिक) द्वारा संभाली जाती हैं, जो शहरी क्षेत्राधिकार के भीतर एक समान प्रशासनिक व्यवस्था संचालित करता है।

6. नागरिक प्रशासन

नागरिक प्रशासन नागरिक जीवन और आर्थिक गतिविधि के सभी पहलुओं को शामिल करता है। इसमें कृषि, खनन, विनिर्माण, मत्स्य पालन, पशु पालन और व्यापार शामिल हैं। अर्थशास्त्र इन गतिविधियों को कैसे विनियमित और मॉनिटर किया जाना चाहिए, इस पर विस्तार से ध्यान केंद्रित करता है।

राज्य का नागरिक प्रशासन 33 विभागों के माध्यम से संचालित होता है, प्रत्येक का नेतृत्व एक वरिष्ठ अधिकारी करता है। ये विभाग विशिष्ट डोमेन को संबोधित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि नागरिक गतिविधियाँ राज्य के उद्देश्यों के साथ संरेखित हों। उदाहरण के लिए, कृषि विभाग फसल उत्पादन और सिंचाई की निगरानी करता है, जबकि व्यापार विभाग शोषण को रोकने और उचित प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए वाणिज्य को नियंत्रित करता है।

अर्थशास्त्र की दूसरी पुस्तक प्रत्येक विभाग के लिए विस्तृत दिशानिर्देश प्रदान करती है, जिसमें उनकी जिम्मेदारियों और संचालन तंत्रों की रूपरेखा दी गई है। इससे

यह सुनिश्चित होता है कि नागरिक प्रशासन कुशलतापूर्वक कार्य करे और राज्य की समग्र समृद्धि में योगदान दे। अर्थशास्त्र में उल्लिखित प्रशासनिक ढाँचा कौटिल्य के एक अत्यंत केंद्रीकृत और कुशल राज्य तंत्र के दृष्टिकोण को दर्शाता है। राज्य को स्पष्ट रूप से परिभाषित घटकों में संगठित करके, जिनमें से प्रत्येक की अपनी जिम्मेदारियाँ और पदानुक्रम हैं, यह ग्रंथ शासन के लिए एक व्यापक ढाँचा प्रदान करता है। यह प्रणाली राज्य की स्थिरता, सुरक्षा और समृद्धि सुनिश्चित करने में जवाबदेही, समन्वय और राजा के अंतिम अधिकार पर जोर देती है। अपने विस्तृत दिशानिर्देशों के माध्यम से, अर्थशास्त्र एक सुचारू रूप से कार्यशील और समृद्ध राज्य प्राप्त करने के लिए एक कुशल प्रशासन के महत्व को दर्शाता है।

तालिका 3: अर्थशास्त्र में विभागों के प्रमुख

सेक्टर	विभाग	सिर
व्यापार और उद्योग	राज्य व्यापार	राज्य व्यापार के मुख्य नियंत्रक
	बाट और माप	बाट एवं माप के मुख्य नियंत्रक
	कपड़ा	मुख्य कपड़ा आयुक्त
	निजी व्यापार	निजी व्यापार के मुख्य नियंत्रक
राजकोष और वित्त	खजाना	कोषागार के मुख्य अधीक्षक
	जैसा	टकसाल के मुख्य मास्टर
	नमक	मुख्य नमक आयुक्त
	गोदामों	गोदामों के मुख्य अधीक्षक
	सीमा शुल्क और चुंगी	सीमा शुल्क और चुंगी के मुख्य नियंत्रक
भूमि उपयोग और पशुधन	हाथी वनपाल	मुख्य हाथी वनपाल
	वन उपज	मुख्य वन उपज अधीक्षक
	सर्वेक्षक और टाइमकीपिंग	मुख्य सर्वेक्षक एवं टाइमकीपर
	ताज भूमि	क्राउन लैंड्स के मुख्य अधीक्षक
	मुकुट झुंड	क्राउन हर्ड्स के मुख्य अधीक्षक
	पशु वध	पशुवध के मुख्य नियंत्रक
	चराइयों	चारागाह भूमि के मुख्य नियंत्रक

सेक्टर	विभाग	सिर
खनन	खनन और धातुकर्म	खनन एवं धातुकर्म के मुख्य नियंत्रक
	धातुओं	मुख्य धातु अधीक्षक
	खानों	मुख्य खान अधीक्षक
	कीमती धातुएँ और आभूषण	कीमती धातुओं और आभूषणों के मुख्य अधीक्षक
	तोपें	आयुध प्रमुख
रक्षा	घुड़सवार सेना	घुड़सवार सेना का मुख्य सेनापति
	हाथी दल	हाथी कोर के मुख्य कमांडर
	कार्ट बॉडी	रथ वाहिनी के मुख्य सेनापति
	पैदल सेना	पैदल सेना के मुख्य कमांडर
नागरिक सेवाएँ	मादक पेय पदार्थ	मादक पेय पदार्थों के मुख्य नियंत्रक
	मनोरंजन	मनोरंजन के मुख्य नियंत्रक
	जुआ	जुआ के मुख्य नियंत्रक
	मंदिरों	मंदिरों के मुख्य अधीक्षक
शिपिंग और संचलन	शिपिंग	मुख्य नौवहन नियंत्रक
	बंदरगाह और बंदरगाह	बंदरगाहों और बंदरगाहों के मुख्य नियंत्रक
	पासपोर्ट	मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

12. महाकाव्यों से लोक प्रशासन के परिप्रेक्ष्य: महाभारत और रामायण

महाभारत

महाभारत, विशेषकर शांति पर्व, शासन में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, एक राजा की जिम्मेदारियों, कराधान सिद्धांतों और प्रशासन में धर्म के अनुप्रयोग पर जोर देता है। प्रमुख तत्वों में शामिल हैं:

शासन में धर्म का महत्व

- धर्म एक केंद्रीय सिद्धांत के रूप में: भीष्म इस बात पर जोर देते हैं कि राजा को धार्मिकता अपनानी चाहिए (राजा धर्म). एक राजा के कार्य समाज के नैतिक ढांचे को प्रभावित करते हैं - यदि शासक धर्म का पालन करता है, तो यह सामाजिक समृद्धि और स्थिरता को बढ़ावा देता है।
- एक राजा के कर्तव्य:
 - न्याय की रक्षा करना और धर्म की रक्षा करना।
 - विषयों को प्रेरित करने के लिए उदाहरण के द्वारा नेतृत्व करना।
 - निष्पक्षता और धर्म के सिद्धांतों का पालन करके शांति और व्यवस्था सुनिश्चित करना।
- राजा की योग्यता: धर्म के माध्यम से अपनी प्रजा की रक्षा के लिए समर्पित राजा न केवल इस लोक में प्रसिद्धि प्राप्त करता है, बल्कि परलोक में भी शाश्वत पुण्य प्राप्त करता है।



शासन में धर्म

राजकोष और कराधान

- राजकोष का महत्व: विशेष रूप से प्रतिकूल परिस्थितियों के दौरान राज्य की सुरक्षा, कल्याण और स्थिरता बनाए रखने के लिए खजाना महत्वपूर्ण है।
- कराधान के सिद्धांत:
 - कर निष्पक्ष होने चाहिए, शास्त्रीय दिशानिर्देशों के अनुरूप होने चाहिए और प्रजा पर बोझ डालने वाले नहीं होने चाहिए।
 - भीष्म ने कहा कि कर संग्रह गाय का दूध निकालने के समान है - यह सावधानी से किया जाता है, लालच से नहीं, कहीं ऐसा न हो कि स्रोत ही नष्ट हो जाए
 - सुझाए गए राजस्व स्रोतों में शामिल हैं:
 - * कृषि उपज का छठा हिस्सा।
 - * जुर्माना और दंड।
 - * सुरक्षा और बुनियादी ढांचे के बदले में व्यापारियों और व्यापारियों पर कर।
 - राज्य और उत्पादकों के बीच मुनाफे का समान वितरण सुनिश्चित करने के लिए करों में उत्पादन स्तर, श्रम और बुनियादी ढांचे पर विचार करना चाहिए।

रामायण

रामायण, विशेष रूप से पुस्तक 2 में "कैसिट सर्ग", राम और भरत के बीच एक प्रवचन को दर्शाता है, जहां राम के प्रश्न सुशासन के सिद्धांतों को रेखांकित करते हैं, बुद्धिमान सलाह, न्याय और प्रशासनिक परिश्रम पर जोर देते हैं।

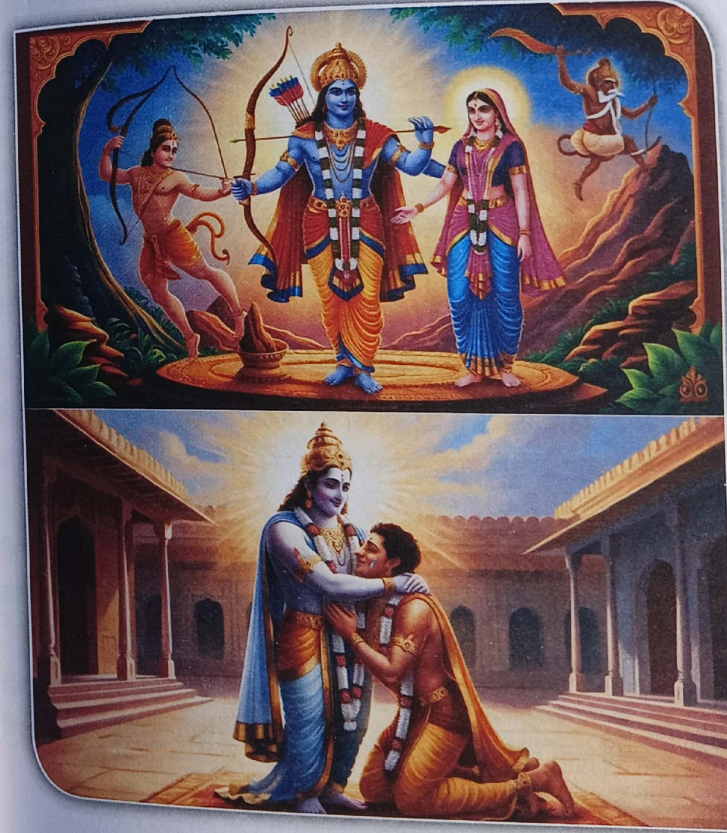
बुद्धिमान परामर्श का महत्व

- सलाहकारों की भूमिका: राम ने योग्य मंत्रियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला (अमात्य), जो विद्वान, बहादुर, आत्म-नियंत्रित और सत्यनिष्ठा रखते हैं।
- प्रभावी परामर्शदाताओं के लक्षण:
 - * शास्त्रों का ज्ञान और प्रशासनिक कौशल।

- नैतिक ईमानदारी, रिश्ततखोरी का विरोध और सार्वजनिक सेवा के प्रति अटूट समर्पण।
- सूक्ष्म संकेतों से जटिल स्थितियों का अनुमान लगाने और उनका विश्लेषण करने की क्षमता।

राम द्वारा पूछे गए प्रश्न:

- क्या आपने ऐसे सलाहकार नियुक्त किये हैं जो नेक, कुशल और भरोसेमंद हों?
- क्या ये सलाहकार भ्रष्टाचार से मुक्त हैं और राज्य के कल्याण के लिए ठोस निर्णय लेने में सक्षम हैं?



रामायण: भगवान राम का महाकाव्य और प्राचीन भारत का इतिहास

न्याय और दंड

राम ने भरत को न्याय पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया, जिसमें निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा और शासन में सतर्कता की आवश्यकता पर जोर दिया। उनकी सलाह में प्रमुख सिद्धांत शामिल थे:

1. समतामूलक न्याय

- राम ने चेतावनी दी कि दोषियों को दंडित करने में विफल रहने से जनता में असंतोष फैल सकता है, जिससे संभावित रूप से विद्रोह हो सकता है।
- उन्होंने निर्दोष व्यक्तियों को, विशेषकर व्यभिचार जैसे अपराधों के झूठे आरोपियों को दंडित न करने की सलाह दी। लालच या लापरवाही से किए गए ऐसे कार्य, शासक और उसके राज्य पर विपत्ति ला सकते हैं।
- पूर्वाग्रह या पक्षपात से बचते हुए सजा आनुपातिक और उचित होनी चाहिए। राजा को संवेदनशील मामलों पर निर्णय लेने से पहले विशेषज्ञों और शास्त्रों से परामर्श लेना चाहिए।
- राम ने चेतावनी देते हुए कहा कि झूठी सजा पाने वालों के आंसू राजा की संतान और समृद्धि को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

2. निगरानी कर रहे अधिकारी

- उच्च पदस्थ अधिकारी, अपनी शक्ति के कारण, भ्रष्ट आचरण में संलग्न हो सकते हैं या नागरिकों का शोषण कर सकते हैं। इसका मुकाबला करने के लिए, राम ने खुफिया जानकारी एकत्र करने और जांच की आवश्यकता पर जोर दिया।
- उन्होंने भरत को जवाबदेही सुनिश्चित करते हुए प्रमुख अधिकारियों की गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए जासूसों को नियुक्त करने की सलाह दी।
- दुश्मन के इलाकों में महत्वपूर्ण जानकारी इकट्ठा करने और अधिकारियों की वफादारी और आचरण का आकलन करने के लिए जासूस भी महत्वपूर्ण थे।



भगवान राम, धर्म और न्याय के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं

गोपनीयता का महत्व

राम ने प्रशासन में गोपनीयता के मूल्य पर प्रकाश डाला और इसे वर्गीकृत जानकारी की आधुनिक अवधारणाओं के बराबर बताया। उन्होंने जोर देकर कहा:

1. गोपनीयता बनाए रखना

- गद्दारों या दुश्मनों को उन्हें कमजोर करने से रोकने के लिए प्रशासनिक निर्णयों की सुरक्षा की जानी चाहिए।
- योजनाओं का समय से पहले खुलासा पहल को पटरी से उतार सकता है और प्रशासन को संभावित खतरों का मुकाबला करने के लिए संसाधन खर्च करने के लिए मजबूर कर सकता है।

2. रणनीतिक कार्यान्वयन

- राम ने पूछा कि क्या भरत ने यह सुनिश्चित किया कि अन्य राज्यों को उसकी योजनाओं के बारे में तभी पता चले जब वे सफल हों या सफल होने के करीब हों।
- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मंत्रियों के निर्णय और इरादे भी तब तक छिपे रहने चाहिए जब तक कि राजा द्वारा स्पष्ट रूप से प्रकट न किया जाए।

3. अनुमान को रोकना

- राजा और उसके मंत्रियों को कार्यों, अनुमान या अनुमान के माध्यम से अपराध योजनाओं को प्रकट करने से बचना चाहिए। गोपनीयता का यह स्तर राज्य के राजनीतिक लाभ की रक्षा करता है।

शहरी विकास और नागरिक कल्याण

भरत से राम के प्रश्नों ने बुनियादी ढांचे, आर्थिक समृद्धि और नागरिक खुशी पर ध्यान केंद्रित करते हुए शासन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रकट किया:

1. शहरी विकास

- राम ने यात्रियों के लिए शांतिपूर्ण स्थानों, मंदिरों, विश्राम गृहों और पानी के टंकियों की उपस्थिति के बारे में पूछताछ की।
- ऐसी सुविधाएं राज्य की सांस्कृतिक जीवंतता और उसके नागरिकों और आगंतुकों के प्रति चिंता को दर्शाती हैं।

2. कृषि एवं आर्थिक कल्याण

- उन्होंने सिंचाई प्रणालियों द्वारा समर्थित सुव्यवस्थित कृषि भूमि के महत्व पर जोर दिया, जो केवल वर्षा पर निर्भर नहीं थी।
- खानों और संसाधनों को उचित तरीके से प्रबंधित करने की आवश्यकता है और मवेशियों को नुकसान और शिकारी खतरों से बचाया जाना चाहिए।

3. सामाजिक एवं आर्थिक समृद्धि

- राम यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि पुरुष और महिलाएं आनंदमय सामाजिक उत्सवों में शामिल हों, जो सामाजिक सद्भाव और आर्थिक कल्याण का प्रतीक हैं।

न्याय, गोपनीयता और नागरिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करके, राम का प्रवचन निष्पक्षता, सुरक्षा और समृद्धि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शासन का एक व्यापक मॉडल प्रस्तुत करता है। ये सिद्धांत प्रभावी लोक प्रशासन के आवश्यक तत्वों के रूप में गूंज रहे हैं।

13. निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय शासन-परंपरा, जैसे कि अर्थशास्त्र, महाभारत, रामायण और मनुस्मृति में वर्णित है, एक समृद्ध, व्यापक और नैतिक आधारों पर स्थापित प्रशासनिक ढांचा प्रस्तुत करती है। ये ग्रंथ केवल प्रशासन के संरचनात्मक पक्षों पर ही नहीं, बल्कि नेतृत्व, न्याय और कल्याण के गहन नैतिक और दार्शनिक आधारों पर भी बल देते हैं।

वैदिक काल के जातीय नेतृत्व मॉडल से लेकर कौटिल्य के अत्यंत सुव्यवस्थित राज्यशास्त्र तक, भारतीय ज्ञान परंपरा एक ऐसे शासन प्रणाली को दर्शाती है जो धर्म, अर्थ और राजधर्म की गहराई में निहित है। प्राचीन शासन का विचार केवल नियंत्रण या शासन तक सीमित नहीं था; यह एक समग्र प्रणाली थी जिसका उद्देश्य सभी नागरिकों की समृद्धि, न्याय, सुरक्षा और नैतिक उत्थान सुनिश्चित करना था।

इन ग्रंथों में निहित प्रज्ञा आधुनिक युग में भी प्रासंगिक है और नेतृत्व, नैतिक शासन, संकट प्रबंधन, सार्वजनिक नीति और सतत विकास के महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। जैसे भारत पुनः विश्वगुरु बनने का लक्ष्य रखता है, वैसे ही इस वैदिक ज्ञान को आधुनिक प्रशासनिक सिद्धांतों के साथ समेकित करना एक ऐसा प्रशासन स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है जो प्रभावी एवं धर्मपरायण दोनों हो।

यह पुस्तक भारतीय प्रशासनिक दर्शन के मुख्य पहलुओं को सरल एवं सुलभ रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास रही है। आशा है कि यह छात्रों, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और नागरिकों को इस सभ्यतागत विरासत की ओर नए उत्साह और विश्वास के साथ देखने के लिए प्रेरित करेगी, और इससे न्यायपूर्ण एवं प्रबुद्ध शासन का एक दृष्टिकोण प्राप्त होगा।

सुझावात्मक पठनीय सामग्री

1. Altekar, A. S. 1958. *State and Government in Ancient India*. 2nd ed. Delhi: Motilal Banarsidass.
2. Chatterjee, Partha. 2012. *The Black Hole of Empire: History of a Global Practice of Power*. Princeton: Princeton University Press.
3. B. Mahadevan, V.R. Bhat, Nagendra Pawan R.N. (2022), "Introduction to Indian Knowledge System", PHI learning private ltd.
4. Drekmeier, Charles. 1962. *Kingship and Community in Early India*. Stanford: Stanford University Press.
5. Jayaswal, K. P. 1924. *Hindu Polity: A Constitutional History of India in Hindu Times*. Bangalore: Bangalore Printing and Publishing Co.
6. Law, N. N. 1923. *Studies in Ancient Indian Political Thought*. London: Longmans, Green & Co.
7. Olivelle, Patrick, ed. 2006. *Between the Empires: Society in India 300 BCE to 400 CE*. Oxford: Oxford University Press.
8. Puri, B. N. 1963. "Public Administration in Ancient India." *Indian Journal of Public Administration* 9 (3): 583-596.
9. Shamasastri, R., trans. 1915. *Kautilya's Arthashastra*. Bangalore: Government Press. Also see: Olivelle, Patrick, trans. 2013. *King, Governance, and Law in Ancient India: Kautilya's Arthashastra*. Oxford: Oxford University Press.
10. Sharma, R. S. 1959. *Aspects of Political Ideas and Institutions in Ancient India*. Delhi: Motilal Banarsidass.
11. Thapar, Romila. 1984. "The Theory of Varna and the State in Ancient India." In *Ancient Indian Social History: Some Interpretations*, 1-37.
12. Thiruvalluvar. *Tirukkural*. Translated by G. U. Pope. 1886. Oxford: Clarendon Press.

13. Doniger, Wendy, and Brian K. Smith, trans. 1991. *The Laws of Manu*. London: Penguin Books.
14. OP Pandey (2023), "Bharat Vaibhav", National Book Trust, India.
15. Van Buitenen, J. A. B., trans. 1981. *The Mahabharata, Volume 3: Book 12-11: The Book of the Women; The Book of Peace*. Chicago: University of Chicago Press.

बहु विकल्पीय प्रश्न

- प्राचीन भारतीय परंपराओं में 'अर्थ' शब्द का क्या तात्पर्य है?
 - धार्मिक पूर्ति
 - ☒ भौतिक समृद्धि एवं आर्थिक स्थिरता
 - व्यक्तिगत आकांक्षाएँ
 - आत्मिक ज्ञान
- निम्नलिखित में से कौन-सा प्राचीन भारतीय परंपराओं के अनुसार जीवन का मुख्य उद्देश्य नहीं है?
 - अर्थ
 - ☒ कर्म
 - धर्म
 - मोक्ष
- समाजिक कल्याण के साथ 'अर्थ' का क्या संबंध है?
 - अर्थ का समाजिक कल्याण से कोई संबंध नहीं
 - अर्थ ही समाजिक कल्याण का एकमात्र आधार है
 - अर्थ केवल व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करता है
 - ☒ अर्थ व्यक्तिगत आकांक्षाओं से आगे बढ़कर समाजिक समृद्धि में योगदान देता है
- शासन व्यवस्था में 'अर्थ' की अवधारणा किस प्रकार का प्रश्न उत्पन्न करती है?
 - ☒ समाज को संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन हेतु कैसे संगठित किया जाए?
 - व्यक्तिगत जीवन में धर्म का क्या महत्व है?
 - राजा अपने व्यक्तिगत धन को कैसे सुरक्षित रखे?
 - धार्मिक अनुष्ठानों को बढ़ाने के लिए कौन-से उपाय अपनाए जाएँ?

- शासन व्यवस्था में 'राजधर्म' की अवधारणा किस बात पर बल देती है?
 - क) राजा का दिव्य अधिकार
 - ☒ राजा का नैतिक एवं प्रशासनिक कर्तव्यों का पालन
 - ग) राज्य की वित्तीय व्यवस्था
 - घ) राजा का आध्यात्मिक कर्तव्य
- 'राजधर्म' राजा से क्या अपेक्षा करता है?
 - क) सभी निर्णयों पर पूर्ण अधिकार
 - ☒ धर्म के अनुसार कार्य कर प्रजा के लिए शांति, सुरक्षा और सुख सुनिश्चित करना
 - ग) विधि व नैतिकता से पूर्ण स्वतंत्रता
 - घ) जनकल्याण की अपेक्षा व्यक्तिगत धन पर ध्यान
- प्राचीन भारत में राजतंत्र के विपरीत कौन-सी शासन प्रणाली थी?
 - क) गणराज्य
 - ख) कुलीनतंत्र
 - ☒ प्रजातंत्र
 - घ) सामंतवाद
- शासन व्यवस्था में प्रजातंत्र राजतंत्र से किस प्रकार भिन्न है?
 - क) प्रजातंत्र में सत्ता उत्तराधिकार से प्राप्त होती है
 - ☒ प्रजातंत्र में चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से सीमित अवधि के लिए शासन होता है
 - ग) प्रजातंत्र में राजा को सर्वोच्च अधिकार प्राप्त होता है
 - घ) दोनों प्रणालियाँ संरचना में समान होती हैं
- प्राचीन भारत का कौन-सा ग्रंथ शासन और लोक प्रशासन की गहन जानकारी देता है?
 - क) भगवद्गीता
 - ☒ अर्थशास्त्र
 - ग) महाभारत
 - घ) रामायण

10. अर्थशास्त्र में कुल कितनी श्लोकें हैं?
 क) 4,000
 ख) 6,000
 ✓ ग) 6,500
 घ) 10,000
11. अर्थशास्त्र का मुख्य विषय क्या है?
 क) सैन्य रणनीति एवं अर्थनीति
 ✓ ख) शासन, अर्थव्यवस्था एवं सैन्य नीति
 ग) धार्मिक अनुष्ठान एवं कर्मकाण्ड
 घ) राजाओं का जीवन एवं आध्यात्मिक यात्रा
12. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रंथ शासन व्यवस्था एवं प्रशासन पर केन्द्रित नहीं है?
 क) मनुस्मृति
 ख) कौटिल्य का अर्थशास्त्र
 ग) महाभारत
 ✓ घ) वेद
13. महाभारत के किस पर्व में 'राजधर्म' का वर्णन है?
 क) उद्योग पर्व
 ख) भीष्म पर्व
 ✓ ग) शान्ति पर्व
 घ) द्रोण पर्व
14. महाभारत के 'शान्ति पर्व' में किस प्रमुख विषय की चर्चा की गई है?
 क) युद्ध की रणनीतियाँ
 ✓ ख) राजा के नैतिक व प्रशासनिक कर्तव्य
 ग) राज्य की रचना
 घ) व्यापार एवं उद्योग का महत्व

15. मनुस्मृति किस प्रकार के न्याय पर बल देती है?
 क) दीवानी न्याय
 ✓ ख) फौजदारी न्याय
 ग) आर्थिक न्याय
 घ) आत्मिक न्याय
16. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कुल कितने अध्याय हैं?
 क) 20
 ख) 40
 ग) 15
 ✓ घ) 150
17. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रंथ शासन में न्याय और दंड के सिद्धांतों पर आधारित है?
 क) कामन्दक का नीतिसार
 ख) अर्थशास्त्र
 ✓ ग) केशव पंडित की दण्डनीति
 घ) महाभारत
18. अर्थशास्त्र के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा राजा का कर्तव्य नहीं है?
 क) नागरिकों के कल्याण को सुनिश्चित करना
 ख) प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना
 ग) नागरिकों के विवादों का निपटारा करना
 ✓ घ) नागरिकों से अत्यधिक कर वसूलना
19. अर्थशास्त्र राज्य के संसाधनों के प्रबंधन के लिए क्या सुझाव देता है?
 क) संसाधनों का अनियंत्रित उपभोग
 ✓ ख) समाज के हित में उनका सतत उपयोग
 ग) व्यक्तिगत धन संचय पर बल
 घ) सभी संसाधनों का पड़ोसी राज्यों को निर्यात

20. प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुसार 'अर्थ' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
- आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करना
 - ☒ समाज के कल्याण हेतु संसाधनों का प्रबंधन
 - व्यक्तिगत धन प्राप्त करना
 - राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना
21. प्राचीन भारत में शासकों के नैतिक कर्तव्यों से संबंधित प्रमुख अवधारणा कौन सी है?
- ☒ राजधर्म
 - अर्थ
 - कर्म
 - मोक्ष
22. अर्थशास्त्र में राजा और मंत्रियों के बीच के संबंध को किस प्रकार दर्शाया गया है?
- राजा का वचन अंतिम होता है और मंत्रियों को कोई अधिकार नहीं होता
 - मंत्री राजा के अधीन होते हैं और उन्हें सदैव आज्ञा माननी होती है
 - ☒ मंत्री शासन का अभिन्न अंग होते हैं और राज्य की नीतियाँ लागू करने में सहयोग करते हैं
 - मंत्री केवल सलाहकार होते हैं, वास्तविक नियंत्रण राजा के पास होता है
23. अर्थशास्त्र के अनुसार शासन में राजा को किसे प्राथमिकता देनी चाहिए?
- राज्य के लिए धन का संचय
 - ☒ नागरिकों के कल्याण व विधि-व्यवस्था की स्थापना
 - सैन्य शक्ति को सुदृढ़ करना
 - व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति
24. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में शासन की एक प्रमुख चिंता क्या थी?
- क्षेत्रीय विस्तार
 - युद्ध एवं रणनीति
 - ☒ नैतिक शासन और समाज कल्याण
 - प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण

25. प्राचीन शासन व्यवस्था में 'धर्म' और 'अर्थ' के बीच क्या संबंध था?
- धर्म, अर्थ से गौण था
 - ☒ धर्म समाज के कल्याण हेतु अर्थ के नैतिक उपयोग को निर्देशित करता था
 - धर्म का अर्थ से कोई संबंध नहीं था
 - अर्थ को धर्म प्राप्त करने हेतु प्रयोग किया जाता था
26. अर्थशास्त्र का मूल उद्देश्य क्या है?
- आध्यात्मिक उन्नति
 - ☒ आंतरिक समरसता और बाह्य शक्ति
 - धार्मिक अनुष्ठान
 - व्यक्तिगत संपत्ति
27. अर्थशास्त्र शासकों के लिए किन दो मूल सिद्धांतों पर बल देता है?
- धन की रक्षा और क्षेत्र का विस्तार
 - ☒ राज्य की रक्षा और शक्ति का विस्तार
 - धर्म की रक्षा और धन की वृद्धि
 - कोश की रक्षा और आंतरिक प्रशासन
28. अर्थशास्त्र के लेखक कौन हैं?
- बृहस्पति
 - ☒ चाणक्य (कौटिल्य)
 - मनु
 - पतंजलि
29. मौर्य साम्राज्य में कौटिल्य की भूमिका क्या थी?
- सैन्य प्रमुख
 - धार्मिक गुरु
 - ☒ सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के सलाहकार
 - विदेशी राजदूत

30. अर्थशास्त्र की पुनः खोज किस वर्ष हुई थी?
- क) 1750
☒ ख) 1905
 ग) 1850
 घ) 1950
31. अर्थशास्त्र की कितनी पुस्तकें हैं ?
- क) 10
 ख) 20
☒ ग) 15
 घ) 25
32. अर्थशास्त्र के कौन-से ग्रंथ आंतरिक प्रशासन से संबंधित हैं?
- ☒ क) ग्रंथ 1-5
 ख) ग्रंथ 6-13
 ग) ग्रंथ 14
 घ) ग्रंथ 10-15
33. अर्थशास्त्र में कौन-से ग्रंथ बाह्य संबंधों और कूटनीति पर केन्द्रित हैं?
- क) ग्रंथ 1-5
☒ ख) ग्रंथ 6-16
 ग) ग्रंथ 14
 घ) ग्रंथ 15
34. अर्थशास्त्र की 14 पुस्तक में क्या वर्णित है?
- क) सैन्य रणनीति
☒ ख) शत्रुओं का गुप्त रूप से विनाश एवं आंतरिक विद्रोह का समाधान
 ग) व्यापार एवं अर्थव्यवस्था
 घ) उत्तराधिकार के नियम

35. अर्थशास्त्र का ग्रंथ किस विषय की प्रस्तावना करता है?
- क) शासन के नियम
 ख) आर्थिक नीतियाँ
☒ ग) समस्या-समाधान और नीति निर्माण के लिए विश्लेषणात्मक विधियाँ
 घ) सैन्य विस्तार की रणनीतियाँ
36. कौटिल्य के अनुसार शासक को कौन-सी चार विद्याओं में पारंगत होना चाहिए?
- क) वेद, अर्थशास्त्र, युद्धकला, व्यापार
☒ ख) तर्कशास्त्र, वेद, अर्थशास्त्र, शासन
 ग) नीतिशास्त्र, अर्थ, विधि, रणनीति
 घ) विधिशास्त्र, गणित, इतिहास, प्रशासन
37. शासन के संदर्भ में अन्वीक्षिकी (तर्कशास्त्र) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
- क) कृषि
 ख) सैन्य रणनीति
☒ ग) तर्क एवं विचार-विमर्श
 घ) कूटनीतिक संबंध
38. कौटिल्य की दृष्टि में शासक के लिए वेदों का सर्वोत्तम वर्णन क्या है?
- क) केवल धार्मिक ग्रंथ
 ख) विधि और व्यवस्था के स्रोत
☒ ग) सामाजिक भूमिकाओं और समरसता का ढाँचा
 घ) केवल अनुष्ठानिक निर्देश
39. कौटिल्य के शासन तंत्र में वार्ता (अर्थशास्त्र) का क्या महत्व है?
- क) यह सैन्य कोष जुटाने पर केंद्रित है
☒ ख) यह कृषि, पशुपालन और व्यापार के माध्यम से धन-संपत्ति उत्पन्न करने में सहायक है
 ग) यह धार्मिक आहुति को प्राथमिकता देता है
 घ) यह शासक की व्यक्तिगत संपत्ति सुनिश्चित करता है

40. अर्थशास्त्र में दण्डनीति की क्या भूमिका है?
- क) यह राजा के धार्मिक कर्तव्यों को परिभाषित करती है
- ☒ ख) यह विधि और व्यवस्था पर केन्द्रित है जिससे समाज में स्थिरता बनी रहे
- ग) यह सैन्य रणनीतियों पर आधारित है
- घ) यह विदेश नीति का संचालन करती है
41. कौटिल्य के अनुसार शासक का मुख्य कर्तव्य क्या है?
- क) धन का संग्रह करना
- ख) विदेशी क्षेत्रों को जीतना
- ☒ ग) प्रजा और उसकी संपत्ति की रक्षा करना
- घ) धार्मिक कर्तव्यों पर ध्यान देना
42. अर्थशास्त्र के अनुसार राजा की बच्चों एवं वृद्धजनों जैसे निर्बल नागरिकों के प्रति क्या जिम्मेदारी है?
- क) उन्हें महत्वहीन मानकर उपेक्षा करना
- ☒ ख) उनके लिए कल्याण और सुरक्षा प्रदान करना
- ग) उनके संरक्षण का दायित्व पुजारियों को सौंपना
- घ) राज्य के राजस्व हेतु उन पर कर लगाना
43. कौटिल्य के शासन सिद्धांत में शासक को किन दो अवधारणाओं में संतुलन बना रखना चाहिए?
- ☒ क) योग और क्षेम
- ख) धर्म और अर्थ
- ग) कर्म और मोक्ष
- घ) शक्ति और धन
44. कौटिल्य के शासन सिद्धांत में 'योग' शब्द का क्या तात्पर्य है?
- क) आध्यात्मिक ध्यान
- ☒ ख) लक्ष्यों की प्राप्ति
- ग) अनुष्ठानिक क्रियाएँ
- घ) व्यापारिक लेन-देन

45. कौटिल्य के शासन सिद्धांत में 'क्षेम' शब्द का क्या अर्थ है?
- ☒ क) प्राप्त उपलब्धियों का शांतिपूर्वक उपभोग
- ख) धन का संचय
- ग) सैन्य विजय का प्रयास
- घ) धर्म का आचरण
46. कौटिल्य की शासन दृष्टि में बुनियादी ढांचे के विकास की क्या भूमिका है?
- क) यह एक अनावश्यक विलासिता है
- ☒ ख) यह राज्य की समृद्धि और सुरक्षा सुनिश्चित करता है
- ग) यह केवल सैन्य विस्तार के लिए है
- घ) यह धार्मिक प्रयोजनों हेतु है
47. अर्थशास्त्र में कौटिल्य व्यापार के विनियमन को कैसे देखते हैं?
- क) वह शोषणकारी लाभ कमाने का समर्थन करते हैं
- ☒ ख) वह वस्तुओं की बिक्री पर नियंत्रण रखने की सलाह देते हैं जिससे व्यापार में न्याय बना रहे
- ग) वह बिना सरकारी हस्तक्षेप के स्वतंत्र बाजार अर्थव्यवस्था का समर्थन करते हैं
- घ) वह आर्थिक नियंत्रण को अनावश्यक मानते हैं
48. कौटिल्य के शासन सिद्धांत में आपदा प्रबंधन का क्या महत्व है?
- क) यह केवल युद्धकाल में लागू होता है
- ☒ ख) राजा को आपदा के समय प्रजा के प्रति पिता के समान व्यवहार करना चाहिए
- ग) यह धार्मिक संस्थानों की जिम्मेदारी है, राज्य की नहीं
- घ) यह सैन्य विस्तार के बाद विचारणीय विषय है
49. कौटिल्य के अनुसार प्रजाजन के कल्याण की उपेक्षा करने से क्या परिणाम हो सकता है?
- क) सैन्य शक्ति में वृद्धि
- ☒ ख) प्रजा की संतुष्टि और निष्ठा

- म) असंतोष और संभावित विद्रोह
घ) विदेशी गठबंधन
50. अर्थशास्त्र के अनुसार राज्य के सप्तांग (सात अंग) कौन-कौन से हैं?
क) राजा, मंत्री, प्रदेश, कोष, सेना, दुर्ग, और मित्र
ख) राजा, सेना, धार्मिक नेता, प्रजा, कोष, अर्थव्यवस्था, और मित्र
ग) सेना, कोष, मंत्री, धर्म, राजा, राजदूत, और न्यायाधीश
घ) शासक, संपत्ति, सेना, भूमि, अर्थव्यवस्था, राजनयिक, और सलाहकार
51. कौटिल्य के अनुसार आदर्श शासक के आवश्यक गुण कौन-से हैं?
क) उदारता, शक्ति, और संपत्ति
ख) शक्ति, कुलीनता, और शास्त्रानुसार आचरण
ग) धार्मिक भक्ति और करुणा
घ) संपत्ति, बुद्धिमत्ता, और सुदृढ़ सैन्य शक्ति
52. निम्नलिखित में से कौन-सा गुण कौटिल्य द्वारा शासक में वांछनीय नहीं माना गया है?
क) प्रेरणादायक विशेषताएँ
ख) बौद्धिक प्रतिभा
ग) चरित्र की दृढ़ता
घ) धार्मिक भक्ति
53. कौटिल्य के अनुसार शासक की शिक्षा में अन्वीक्षिकी की क्या भूमिका है?
क) आर्थिक प्रबंधन की समझ को बढ़ाना
ख) समता एवं जीवन की व्यापक दृष्टि विकसित करना
ग) शारीरिक क्षमता को सुदृढ़ करना
घ) धार्मिक अनुष्ठानों की शिक्षा देना
54. कौटिल्य के शासन सिद्धांत में वेद-विद्या (त्रयी) किस पहलू को बल देती है?
क) सैन्य आचरण के नियम
ख) सामाजिक प्रणाली एवं परंपराएँ
ग) आर्थिक प्रबंधन
घ) संघर्ष समाधान

55. कौटिल्य के शासकीय शिक्षा मॉडल में दण्डनीति का उद्देश्य क्या है?
क) धार्मिक कर्तव्यों की शिक्षा देना
ख) प्रभावी शासन और विधि-पालन सुनिश्चित करना
ग) सैन्य रणनीति का विकास करना
घ) व्यापारिक संबंध स्थापित करना
56. कौटिल्य के अनुसार राजा को अपनी दिनचर्या कैसे नियोजित करनी चाहिए?
क) व्यक्तिगत सुख-विलास को अधिक समय देना चाहिए
ख) प्रशासनिक कार्यों को प्राथमिकता देते हुए व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए न्यूनतम समय देना चाहिए
ग) संपूर्ण रूप से शासन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए
घ) शासन कार्यों को दूसरों को सौंप देना चाहिए
57. कौटिल्य के अनुसार राजा को प्रतिदिन कितने घंटे निद्रा लेनी चाहिए?
क) 5 घंटे
ख) 4½ घंटे
ग) 6 घंटे
घ) 8 घंटे
58. मनुस्मृति में राजा के कर्तव्यों के संदर्भ में शासन का कौन-सा पक्ष प्रमुख रूप से उल्लेखित है?
क) सैन्य रणनीति का महत्व
ख) मंत्रियों की नियुक्ति, जनकल्याण, और विदेश नीति
ग) धार्मिक अनुष्ठान और यज्ञ
घ) धन संग्रह और कराधान
59. कौटिल्य के अनुसार शासन में अमात्य (मंत्री) की क्या भूमिका है?
क) केवल सैन्य सलाहकार
ख) केवल कर संग्रह के उत्तरदायी
ग) निर्णय लेने वाले और प्रशासनिक कार्यों के कार्यान्वयनकर्ता
घ) राज्य के धार्मिक नेता

60. कौटिल्य के तंत्र में मन्त्रिन् और अमात्य की भूमिकाओं में प्रमुख अंतर क्या है?
- क) मन्त्रिन् सैन्य प्रमुख होते हैं जबकि अमात्य प्रशासन संभालते हैं
- ✓ ख) मन्त्रिन् उच्च स्तरीय सलाहकार होते हैं जो गोपनीय परामर्श देते हैं, जबकि अमात्य प्रशासनिक कार्य करते हैं
- ग) मन्त्रिन् जनकल्याण देखते हैं जबकि अमात्य कर प्रबंधन करते हैं
- घ) मन्त्रिन् भूमि व्यवस्था देखते हैं जबकि अमात्य विधि व्यवस्था का संचालन करते हैं
61. कौटिल्य राजा की मन्त्रिपरिषद् में कितने मन्त्रिन् रखने की अनुशंसा करते हैं?
- क) 1-2
- ख) 5-6
- ✓ ग) 3-4
- घ) 12-20
62. आपातकालीन समय में व्यापक विचार-विमर्श हेतु मन्त्रिपरिषद् का अनुशंसित आकार क्या है?
- क) 10-सदस्य
- ख) 3-4 सदस्य
- ✓ ग) 12-सदस्य
- घ) 5-सदस्य
63. कौटिल्य शासन में राजा और मन्त्रिपरिषद् के संबंध को कैसे परिभाषित करते हैं?
- क) राजा को परिषद् से स्वतंत्र होकर कार्य करना चाहिए
- ✓ ख) शासन सामूहिक बुद्धिमत्ता और राजा व परिषद् के संतुलन पर आधारित है
- ग) परिषद् राजा के व्यक्तिगत निर्णयों के अधीन होनी चाहिए
- घ) परिषद् केवल सैन्य विषयों पर परामर्श दे
64. कौटिल्य के शासन दृष्टिकोण में जनपद (प्रदेश व प्रजा) का क्या महत्व है?
- क) यह राज्य प्रशासन के लिए अप्रासंगिक है
- ✓ ख) यह राज्य की आर्थिक रीढ़ है और राजा की शक्ति का निर्धारक है
- ग) यह केवल धार्मिक कार्यों के लिए है
- घ) यह केवल सैन्य रक्षा से संबंधित है

65. निम्नलिखित में से कौन-सा भूमि उपयोग का कार्य अर्थशास्त्र द्वारा अनुशंसित नहीं है?
- क) सुरक्षा हेतु किले निर्माण
- ख) कृषि के लिए सिंचाई व्यवस्था का विकास
- ✓ ग) व्यक्तिगत उपयोग के लिए
- घ) आर्थिक विकास हेतु व्यापार मार्गों की स्थापना
66. कौटिल्य ने राज्य में बस्तियों को किस प्रकार व्यवस्थित करने की सिफारिश की थी?
- क) हजारों परिवारों वाले बड़े नगरों की स्थापना करना
- ✓ ख) 100-परिवारों वाले ग्रामों की रचना करना, जिनमें कृषकों को प्राथमिकता दी जाए
- ग) केवल सैन्य बस्तियों पर ध्यान केंद्रित करना
- घ) भूमि को केवल व्यापार और वाणिज्य हेतु आवंटित करना
67. कौटिल्य की प्रशासनिक व्यवस्था में 'संग्रहण' की भूमिका क्या है?
- क) यह ग्रामों का जिला मुख्यालय होता है
- ✓ ख) यह ग्रामों का मुख्यालय होता है
- ग) यह विदेश संबंधों के लिए उत्तरदायी होता है
- घ) यह राजा की निजी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है
68. कौटिल्य की रक्षानीति में सीमावर्ती किलों का रणनीतिक महत्व क्या है?
- क) ये केवल औपचारिक उद्देश्यों के लिए होते हैं
- ✓ ख) ये आक्रमणों से रक्षा करते हैं और प्राकृतिक सुरक्षा स्थलों पर स्थित होते हैं
- ग) ये नगर की सीमा में आंतरिक सुरक्षा हेतु स्थित होते हैं
- घ) शांतिपूर्ण राज्य में इनकी आवश्यकता नहीं होती
69. अर्थशास्त्र के अनुसार कौन-सा किला सबसे सुरक्षित माना गया है?
- क) नदी किले
- ✓ ख) पर्वतीय किले
- ग) स्थल किले
- घ) समुद्र किले

70. अर्थशास्त्र में सतत शासन का दृष्टिकोण किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?
- केवल सैन्य विस्तार पर ध्यान देकर
 - ☒ नेतृत्व, प्रशासन और भूमि प्रबंधन की परस्पर निर्भरता पर बल देकर नागरिक कल्याण हेतु
 - धन संचय और व्यापार को प्राथमिकता देकर
 - केवल राजा की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करके
71. अर्थशास्त्र के अनुसार राज्य की रक्षा और विकास हेतु सेना से भी अधिक महत्वपूर्ण क्या है?
- ☒ कोष (धन भंडार)
 - राजा की व्यक्तिगत शक्ति
 - सैन्य गठबंधन
 - व्यापार मार्ग
72. अर्थशास्त्र में राज्य की आय का प्रमुख स्रोत क्या है?
- विदेशी उपहार और श्रद्धांजलियाँ
 - ☒ कर, शुल्क और राज्य उपक्रमों से प्राप्त लाभ
 - सैन्य विजय
 - ऋण और विदेशी निवेश
73. अर्थशास्त्र के अनुसार कृषि उत्पाद का कितना भाग कर (भाग) के रूप में एकत्र किया जाता है?
- दसवाँ भाग
 - पाँचवाँ भाग
 - ☒ छठा भाग
 - चौथाई भाग
74. अर्थशास्त्र में कृषि उत्पाद पर कौन-से अतिरिक्त कर लगाए जाते हैं?
- भूमि स्वामित्व पर कर
 - ☒ जल उपयोग पर कर, जो उत्पाद का पाँचवाँ से तिहाई भाग हो सकता है
 - कृषि उपकरण पर कर
 - श्रम योगदान पर कर

75. निम्न में से कौन-सा अर्थशास्त्र में राज्य की आय का स्रोत नहीं है?
- व्यापार और वाणिज्यिक शुल्क
 - खनिज और उत्पादन से आय
 - ☒ सैन्य विजय
 - श्रमिक योगदान
76. अर्थशास्त्र के अनुसार श्रमिक योगदान को नियंत्रित करने में राज्य की क्या भूमिका है?
- राज्य उपक्रमों हेतु स्वैच्छिक श्रम को प्रोत्साहित करना
 - ☒ प्रजाजनों से श्रम को राज्य के प्रति कर्तव्य के रूप में प्राप्त करना
 - केवल युद्ध के समय श्रम लेना
 - केवल कृषि क्षेत्र से श्रम लेना
77. अर्थशास्त्र के अनुसार भंडार सुरक्षित रखने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
- सैन्य खर्चों की पूर्ति
 - ☒ मूल्य स्थिर रखना और संकट के समय कमी से बचाव
 - कोष हेतु धन एकत्र करना
 - अधिशेष वस्तुओं का निर्यात पड़ोसी राज्यों को करना
78. संकट के समय कोष भरने हेतु अर्थशास्त्र में कौन-से उपाय सुझाए गए हैं?
- ☒ कर बढ़ाना, ऋण लेना या शत्रु की संपत्ति पर अधिकार
 - राजपरिवार की भूमि और संपत्ति बेचना
 - सैन्य व्यय में कटौती करना
 - केवल विदेशी व्यापार पर निर्भर रहना
79. अर्थशास्त्र में 'शुल्क' कर की भूमिका क्या है?
- कृषि पर कर
 - विक्रय या व्यापार पर लेन-देन कर
 - ☒ आयात-निर्यात पर सीमा शुल्क
 - श्रम योगदान पर कर

80. अर्थशास्त्र में 'भाग' कर क्या है?
- विदेशी व्यापारियों पर कर
 - एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में ले जाने वाली वस्तुओं पर शुल्क
 - ☒ कृषि उत्पादन का एक भाग (प्रायः छठा भाग)
 - राजपरिवार की आय पर कर
81. निम्नलिखित में से कौन-सा अर्थशास्त्र की शब्दावली में कर का प्रकार नहीं है?
- मार्ग कर (वर्तनी)
 - ☒ राजकीय भूमि पर कर
 - सेना रख-रखाव कर
 - राजकीय वस्तुओं पर लेन-देन कर
82. अर्थशास्त्र में 'वर्तनी' (मार्ग कर) का उद्देश्य क्या है?
- ☒ मार्गों का रखरखाव और मरम्मत
 - सैन्य अभियानों का वित्तपोषण
 - व्यापार का नियमन
 - कृषि गतिविधियों का समर्थन
83. अर्थशास्त्र में 'प्रक्रिया' कर किसे संदर्भित करता है?
- धार्मिक अनुष्ठानों पर कर
 - ☒ खनन और वनों जैसे संसाधनों के निष्कर्षण पर शुल्क
 - कृषि उत्पादन पर कर
 - विलासिता वस्तुओं पर विक्रय कर
84. अर्थशास्त्र में 'मानव्याजि' लेन-देन कर किससे संबंधित है?
- ☒ राजकीय वस्तुओं पर कर
 - विदेशी आयात पर कर
 - व्यापारियों द्वारा प्रदत्त सेवाओं पर कर
 - कृषि निर्यात पर कर

85. अर्थशास्त्र के अनुसार वस्तु या सेवा के रूप में दिए जाने वाले कर का उदाहरण क्या है?
- ☒ वस्तुओं या सेवाओं में दिया गया कर
 - धनराशि में दिया गया कर
 - विलासिता वस्तुओं पर कर
 - विदेशी व्यापार पर कर
86. अर्थशास्त्र में 'विष्टि' कर क्या है?
- ☒ राज्य उपक्रमों में श्रमिक योगदान पर कर
 - कृषि उत्पादन पर कर
 - विदेशी व्यापार पर कर
 - राजकीय वस्तुओं पर कर
87. अर्थशास्त्र में 'आयुधीय' कर क्या है?
- सैन्य सामग्री पर कर
 - ☒ राज्य की सेना हेतु सैनिक प्रदान करने की बाध्यता
 - हथियार व्यापार पर कर
 - सैन्य उपयोग हेतु भूमि पर कर
88. अर्थशास्त्र में 'पिण्डकर' कर क्या है?
- ☒ ग्रामीणों द्वारा वस्तु के रूप में दिया गया कर
 - कृषि उत्पादन पर कर
 - राज्य के भीतर व्यापार पर कर
 - राजकीय सेवकों पर कर
89. अर्थशास्त्र में कौन-सा शुल्क राजकीय सेवाओं से संबंधित है?
- ☒ मुद्रा टकसाल के लिए मुद्रांकन शुल्क
 - विदेशी व्यापारियों पर कर
 - कृषि कर
 - राजकीय वस्तुओं पर लेन-देन कर

90. अर्थशास्त्र में 'रूपिक' शुल्क क्या है?
 क) आयातित वस्तुओं पर कर
☒ ख) मुद्रा बनाने हेतु मुद्रांकन शुल्क
 ग) सैन्य सामग्री पर कर
 घ) भूमि सर्वेक्षण हेतु शुल्क
91. अर्थशास्त्र में 'योग-क्षेम' का क्या तात्पर्य है?
 क) राजा की निजी संपत्ति और समृद्धि
☒ ख) राज्य के उद्देश्य की प्राप्ति और समृद्धि का शांतिपूर्ण उपभोग
 ग) कर लगाने की राजा की शक्ति
 घ) विदेश नीति का संचालन
92. अर्थशास्त्र में 'दण्ड' (बलप्रयोग) की क्या भूमिका है?
 क) व्यापार और वाणिज्य को प्रोत्साहन देना
☒ ख) न्याय और सामाजिक व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु सावधानीपूर्वक उपयोग
 ग) विदेश व्यापार पर नियंत्रण का साधन
 घ) प्रजाजनों से कर वसूलने का साधन
93. अर्थशास्त्र के अनुसार 'दण्ड' (बलप्रयोग) का दुरुपयोग करने का क्या संभावित परिणाम है?
 क) किसी प्रतिद्वन्द्वी राज्य का उदय
☒ ख) असंतोष, विद्रोह और राजसत्ता के विरुद्ध हिंसा की आशंका
 ग) राज्य की आय में वृद्धि
 घ) राज्य के व्यापारिक संबंधों में कमजोरी
94. अर्थशास्त्र में कानून व्यवस्था के संदर्भ में राजा की मुख्य जिम्मेदारी क्या है?
 क) विदेश नीति का संचालन
 ख) कर संग्रह करना
☒ ग) समय-समय पर प्रजाजनों से भेंट कर उनकी शिकायतें सुनना और न्याय सुनिश्चित करना
 घ) व्यापार और वाणिज्य की देखरेख

95. अर्थशास्त्र में व्यक्तियों के मध्य दीवानी मामलों का निपटारा कौन करता है?
 क) नगर अधीक्षक
 ख) महामात्य
☒ ग) धर्मस्थ (न्यायाधीश)
 घ) स्वयं राजा
96. अर्थशास्त्र के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में आपराधिक मामलों की देखरेख कौन करता है?
 क) नगर अधीक्षक
 ख) महामात्य
☒ ग) प्रदेशद्र (न्यायाधिकारी)
 घ) राजा के मंत्री
97. अर्थशास्त्र के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में न्याय व्यवस्था कैसी होती है?
 क) राजा के निजी प्रशासन के अधीन केंद्रीकृत
☒ ख) प्रत्येक जिले में तीन न्यायाधीशों की समिति द्वारा विकेंद्रीकृत
 ग) ग्रामीण क्षेत्रों में न्याय व्यवस्था नहीं होती
 घ) केवल सैन्य अधिकारियों द्वारा न्याय व्यवस्था संचालित होती है
98. अर्थशास्त्र में कारीगरों और व्यापारियों को कैसे नियंत्रित किया जाता है?
 क) उन्हें अपनी गतिविधियाँ स्वयं संचालित करने की स्वतंत्रता होती है
☒ ख) विशेष अधिकारी उनकी गतिविधियों की निगरानी करते हैं ताकि ठगी, धोखाधड़ी और शोषण रोका जा सके
 ग) उनकी आय के आधार पर कर लगाया जाता है
 घ) उनके व्यापार केवल राजपरिवार द्वारा संचालित होते हैं
99. अर्थशास्त्र के अनुसार अधिकारियों में भ्रष्टाचार से सुरक्षा हेतु राज्य क्या उपाय करता है?
 क) अधिक अधिकारियों की नियुक्ति कर एक-दूसरे की निगरानी
☒ ख) गुप्त निगरानी और जाल बिछाकर भ्रष्ट व्यक्तियों को पकड़ना
 ग) अधिकारियों की संख्या सीमित करना
 घ) अधिकारियों को रिश्वत देकर भ्रष्टाचार से रोकना

100. अर्थशास्त्र में न्याय के चार प्रमुख स्रोत कौन-से हैं?
- क) धर्म, राजाज्ञा, सैन्य शक्ति, और जनमत
 - ☒ ख) धर्म, साक्षी की गवाही, परंपरा, और पूर्व उदाहरण
 - ग) धार्मिक विधियाँ, राजाज्ञाएँ, सैन्य विधियाँ, और जनसहमति
 - घ) धर्म, बाह्य विधियाँ, स्थानीय परंपराएँ, और राजकीय आदेश
101. अर्थशास्त्र में दण्ड (बल प्रयोग) का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
- ☒ क) सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना और नागरिकों के कल्याण को सुनिश्चित करना
 - ख) राज्य की सीमाओं का विस्तार करना
 - ग) पड़ोसी राज्यों से संधियाँ स्थापित करना
 - घ) व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों का समर्थन करना
102. अर्थशास्त्र के अनुसार, कानून और व्यवस्था सुनिश्चित करने की अंतिम जिम्मेदारी किसकी होती है?
- क) सेनापति
 - ख) मंत्रीगण
 - ☒ ग) राजा
 - घ) सलाहकार परिषद
103. अर्थशास्त्र में कौटिल्य की विदेश नीति का केंद्रीय विचार क्या है?
- क) व्यापार और आर्थिक संधियों पर केंद्रित होना
 - ☒ ख) पड़ोसी राज्यों के बीच संबंध और शक्ति संतुलन
 - ग) हर कीमत पर सैन्य विस्तार करना
 - घ) केवल शांतिपूर्ण वार्ता पर निर्भर रहना
104. अर्थशास्त्र के अनुसार, राजा की विदेश नीति के विकल्प किन पर निर्भर करते हैं?
- क) राजा की राजनीतिक विचारधारा पर
 - ☒ ख) राज्य की आंतरिक शक्ति, विशेषकर षाड्युग तत्वों पर
 - ग) राज्य के भौगोलिक स्थान पर
 - घ) राज्य के पास उपलब्ध आर्थिक संसाधनों पर

105. अर्थशास्त्र के अनुसार, राजाओं के बीच शक्ति-संबंध की तीन संभावनाएँ कौन-सी हैं?
- ☒ क) समान शक्ति, अधिक शक्तिशाली, कमजोर
 - ख) अधिक शक्तिशाली, तटस्थ, निष्क्रिय
 - ग) शत्रुता, शांतिपूर्ण, उदासीन
 - घ) समान शक्ति, कूटनीतिक, विस्तारवादी
106. निम्नलिखित में से कौन-सा अर्थशास्त्र में वर्णित छह विदेश नीति विधियों में से एक है?
- क) कूटनीति, संधि, युद्ध, गठबंधन, तटस्थता, पृथक्करण
 - ☒ ख) संधि, विग्रह, आसन, यान, संश्रय, द्वैधिभाव
 - ग) युद्ध, आक्रमण, नाकाबंदी, दमन, समझौता, शांति
 - घ) अधीनता, वार्ता, युद्ध, रोकथाम, मध्यस्थता, बल प्रयोग
107. अर्थशास्त्र में संधि नीति का उद्देश्य क्या है?
- क) शक्तिशाली राज्यों पर युद्ध घोषित करना
 - ☒ ख) समझौते या संधियों के माध्यम से संघर्ष से बचना
 - ग) गुप्त रूप से शत्रु को कमजोर करना
 - घ) भविष्य में सैन्य विजय की तैयारी करना
108. अर्थशास्त्र के अनुसार विग्रह नीति का क्या तात्पर्य है?
- क) बाह्य संघर्षों से बचने हेतु तटस्थता की नीति
 - ख) शांतिपूर्ण विदेश नीति
 - ☒ ग) खुला या गुप्त रूप से युद्ध की नीति
 - घ) शक्तिशाली राज्यों से शरण लेना
109. अर्थशास्त्र में संश्रय नीति का क्या उद्देश्य है?
- क) युद्ध की तैयारी करना
 - ☒ ख) किसी शक्तिशाली राजा से शरण लेना
 - ग) सभी पड़ोसी राज्यों से शांति बनाए रखना
 - घ) चुप रहकर परिस्थिति का निरीक्षण करना

110. अर्थशास्त्र में द्वैधिभाव नीति की मुख्य विशेषता क्या है?

- क) सभी पड़ोसी राज्यों से शांति बनाए रखना
- ☒ ख) एक राजा से शांति और दूसरे से शत्रुता रखना
- ग) सभी शत्रुओं से केवल युद्ध करना
- घ) किसी तटस्थ राज्य से शरण लेना

111. अर्थशास्त्र के अनुसार राजा की मंत्रिपरिषद की प्रमुख जिम्मेदारी क्या है?

- क) राजा को धार्मिक और अनुष्ठानिक विषयों में सलाह देना
- ☒ ख) नीति निर्माण और क्रियान्वयन में राजा की सहायता करना
- ग) राजपरिवार के निजी मामलों की देखरेख करना
- घ) अन्य राज्यों से विदेशी संबंधों का प्रबंधन करना

112. अर्थशास्त्र में राजप्रासाद प्रशासन का प्रमुख कार्य क्या है?

- क) कृषि संसाधनों का प्रबंधन
- ☒ ख) राजपरिवार की सुरक्षा और गृहकार्य की निगरानी
- ग) व्यापार और वाणिज्य का प्रबंधन
- घ) सैन्य रक्षा रणनीतियों का आयोजन

113. अर्थशास्त्र के अनुसार राजा और राजपरिवार की सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी होती है?

- क) कोषाध्यक्ष प्रमुख
- ☒ ख) राजप्रासाद रक्षक प्रमुख
- ग) राजा के निजी सलाहकार
- घ) सेना प्रमुख

114. अर्थशास्त्र में सेनापति (सैन्य प्रमुख) की भूमिका क्या है?

- क) आंतरिक कानून व्यवस्था का प्रबंधन
- ख) राजपरिवार की गतिविधियों की निगरानी
- ☒ ग) राज्य की बाह्य सुरक्षा और आंतरिक स्थिरता बनाए रखना
- घ) कूटनीतिक वार्ताओं का संचालन करना

115. अर्थशास्त्र में कोष विभाग किसका प्रबंधन करता है?

- क) विदेशी व्यापार का प्रशासन
- ☒ ख) राज्य की आय और संसाधनों का संग्रह एवं सुरक्षा
- ग) सैन्य संसाधनों का प्रबंधन
- घ) कृषि गतिविधियों का नियमन

116. अर्थशास्त्र में कानून व्यवस्था को राजस्व प्रणाली से कैसे जोड़ा गया है?

- क) व्यापार कानूनों के प्रबंधन के माध्यम से
- ☒ ख) कोषाध्यक्ष द्वारा वित्तीय योजना और आंतरिक सुरक्षा की निगरानी से
- ग) कानून प्रवर्तन का दायित्व सैन्य अधिकारियों को सौंपकर
- घ) बाह्य गुप्तचर एजेंसियों के माध्यम से

117. अर्थशास्त्र में नागरिक मामलों के प्रशासन को कैसे संगठित किया गया है?

- क) सैन्य नियंत्रण पर केंद्रित होकर
- ☒ ख) विभागों के माध्यम से, प्रत्येक का नेतृत्व एक वरिष्ठ अधिकारी करता है
- ग) सभी निर्णयों को स्थानीय नेताओं को सौंपकर
- घ) एक केंद्रीय प्राधिकरण के माध्यम से जो सभी क्षेत्रों का प्रबंधन करता है

118. महाभारत में राजा के शासन का केंद्रीय सिद्धांत क्या है?

- क) धन और भौतिक समृद्धि
- ☒ ख) धर्म (नीति और न्याय)
- ग) सैन्य विजय
- घ) व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा

119. महाभारत के अनुसार राजा की क्या जिम्मेदारी है?

- क) सैन्य मामलों पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखना
- ☒ ख) न्याय सुनिश्चित करना, धर्म की रक्षा करना, और आदर्श नेतृत्व देना
- ग) केवल आर्थिक विकास पर ध्यान देना
- घ) केवल मंत्रियों की इच्छानुसार कार्य करना

120. महाभारत में कोष का उद्देश्य क्या है?

- क) धार्मिक अनुष्ठानों का वित्तपोषण करना
- ☒ ख) राज्य की सुरक्षा, कल्याण और स्थिरता बनाए रखना
- ग) सैन्य विस्तार के लिए धन एकत्रित करना
- घ) विदेशी व्यापार में निवेश करना

121. महाभारत में भीष्म कराधान के बारे में क्या बल देते हैं?

- क) करों का उपयोग केवल सैन्य उद्देश्यों के लिए होना चाहिए
- ख) कर अत्यधिक होने चाहिए जिससे राज्य को पर्याप्त संसाधन मिल सकें
- ☒ ग) कर उचित, मध्यम और प्रजा पर भारहीन होने चाहिए
- घ) कर केवल धनी व्यापारियों से ही लिए जाने चाहिए

122. रामायण में योग्य अमात्य (मंत्री) शासन में क्या भूमिका निभाते हैं?

- क) केवल सैन्य रणनीति तैयार करते हैं
- ☒ ख) शास्त्रों के ज्ञान और प्रशासनिक कौशल के आधार पर सलाह देते हैं
- ग) केवल व्यापार और वाणिज्य का प्रबंधन करते हैं
- घ) सार्वजनिक अनुष्ठानों और समारोहों का आयोजन करते हैं

123. रामायण में प्रभावी मंत्रियों के लिए किन गुणों पर बल दिया गया है?

- क) युद्धकला और रणनीति में दक्षता
- ☒ ख) शास्त्रों का ज्ञान, ईमानदारी, और भ्रष्टाचार से दूर रहना
- ग) कृषि और संसाधनों की देखरेख की क्षमता
- घ) पड़ोसी राज्यों से अच्छे संबंध

124. रामायण के अनुसार यदि न्याय समान रूप से नहीं दिया जाए तो क्या परिणाम हो सकते हैं?

- क) व्यापार और आर्थिक समृद्धि में वृद्धि हो सकती है
- ☒ ख) जनता में असंतोष और विद्रोह हो सकता है
- ग) राजा की संधियाँ मजबूत होंगी
- घ) सेना का मनोबल और विजय की संभावना बढ़ेगी

125. रामायण में राम उच्च पदस्थ अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय बताते हैं?

- क) प्रशासन में पारदर्शिता और जनसहभागिता को बढ़ावा देना
- ☒ ख) गुप्तचरों द्वारा अधिकारियों की गतिविधियों की निगरानी करना
- ग) अधिकारियों को आत्म-नियंत्रित रहने देना
- घ) सभी निगरानी कार्य स्थानीय शासकों को सौंपना

126. रामायण में राम के अनुसार शासन में गोपनीयता का क्या महत्व है?

- क) यह शत्रुओं के लिए शासकों के कार्यों को अप्रत्याशित बनाए रखती है
- ☒ ख) इससे राजा को प्रतिद्वंद्वी राज्यों पर लाभ मिलता है
- ग) यह प्रशासनिक निर्णयों को जनता से छिपाती है
- घ) इससे रणनीतिक योजना और तैयारी की आवश्यकता समाप्त हो जाती है

127. रामायण में राम नगरीय विकास के संबंध में क्या परामर्श देते हैं?

- क) फोकस पूरी तरह से सैन्य किलेबंदी पर होना चाहिए
 - ☒ ख) नागरिकों और यात्रियों के लिए शांतिपूर्ण स्थान, मंदिर, विश्राम गृह और पानी की टंकियाँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए
 - ग) राज्य को केवल कृषि विस्तार में ही निवेश करना चाहिए
 - घ) शहरी विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए
- उत्तर: ख) नागरिकों और यात्रियों के लिए शांतिपूर्ण स्थान, मंदिर, विश्राम गृह और पानी की टंकियाँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए

128. रामायण में राम कृषि तथा आर्थिक कल्याण के संबंध में किस बात पर विशेष बल देते हैं?

- क) केवल कराधान को कृषि उत्पादन पर केंद्रित किया जाना चाहिए
- ☒ ख) सिंचाई प्रणालियों द्वारा समर्थित सुव्यवस्थित कृषि भूमि समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है
- ग) कृषि पर व्यापार को प्राथमिकता दी जानी चाहिए
- घ) खदानों जैसे प्राकृतिक संसाधनों को राज्य की आर्थिक योजना से बाहर रखा जाना चाहिए

129. रामायण में राम अपने राज्य की आदर्श सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों का वर्णन किस प्रकार करते हैं?
- क) पुरुषों और महिलाओं को सख्त सैन्य अनुशासन के तहत रहना चाहिए
- ✓ ख) राज्य को लोगों के आनंदमय सामाजिक उत्सवों में शामिल होने के साथ सामाजिक सद्भाव और आर्थिक कल्याण सुनिश्चित करना चाहिए
- ग) राज्य को सामाजिक कल्याण की चिंता किए बिना केवल आर्थिक समृद्धि पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए
- घ) व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए नागरिकों पर लगातार निगरानी रखी जानी चाहिए
130. महाभारत के अनुसार, राजा के गुणों का क्या महत्व है?
- क) यह वर्तमान दुनिया में केवल प्रसिद्धि और समृद्धि सुनिश्चित करता है
- ✓ ख) जो राजा धर्मपूर्वक अपनी प्रजा की रक्षा करता है, उसे शाश्वत पुण्य प्राप्त होता है
- ग) यह सुनिश्चित करता है कि राजा बाहरी खतरों से मुक्त रहे
- घ) यह सैन्य विजय में राजा की सफलता की गारंटी देता है
131. कौन-सा ग्रन्थ दूतों, गुप्तचरों एवं युद्धनीति की चर्चा करता है?
- क) मनु-स्मृति
- ख) राजनिति-रत्नाकर
- ✓ ग) कामन्दक का नीति-सार
- घ) दण्डनीति
132. कौटिल्य के अनुसार राजा की शिक्षा के चार स्तम्भों में निम्नलिखित में से कौन-सा सम्मिलित नहीं था?
- क) अन्वीक्षिकी
- ख) वार्ता
- ✓ ग) ज्योतिष (ज्योतिषशास्त्र)
- घ) दण्डनीति

133. कौटिल्य ने किस सम्राट को परामर्श दिया था?
- ✓ क) चन्द्रगुप्त मौर्य
- ख) अशोक महान
- ग) हर्षवर्धन
- घ) विक्रमादित्य
134. अर्थशास्त्र की पुनः खोज किस वर्ष में हुई थी?
- क) 1890
- ख) 1885
- ✓ ग) 1905
- घ) 1920
135. कौन-सा ग्रन्थ राजाओं व मन्त्रियों के कर्तव्यों एवं नैतिक गुणों का वर्णन करता है?
- क) राजनिति-रत्नाकर
- ✓ ख) मानसोल्लास
- ग) दण्डनीति
- घ) अर्थशास्त्र
136. निम्नलिखित में से कौन-सा तत्त्व सप्त-प्रकृतियों (राज्य के सात अंगों) में सम्मिलित नहीं है?
- क) राजा
- ख) सेना
- ✓ ग) न्यायपालिका
- घ) कोश (धनकोष)
137. अन्वीक्षिकी राजा को किस प्रकार का प्रशिक्षण देती है?
- ✓ क) दार्शनिक चिन्तन व संतुलित विचार
- ख) शारीरिक स्वास्थ्य
- ग) यज्ञ-यागादि
- घ) व्यापारिक वार्ता

138. अर्थशास्त्र में नागरिक प्रशासन के अन्तर्गत कितने विभाग थे?

- क) 20
- ख) 25
- ☒ ग) 33
- घ) 35

139. अधिकारियों की निगरानी हेतु राम ने किस समूह की अनुशंसा की थी?

- क) योद्धा
- ख) लोक अभियोजक
- ग) पुरोहित
- ☒ घ) गुप्तचर

140. अर्थशास्त्र में 'दण्ड' शब्द का प्रमुख अर्थ क्या है?

- क) धार्मिक अनुष्ठान
- ख) आर्थिक योजना
- ☒ ग) राज्य की दमनकारी शक्ति
- घ) दार्शनिक विमर्श

141. ग्रामीण क्षेत्रों में आपराधिक मामलों का निपटारा करने वाला अधिकारी कौन होता था?

- क) धर्मस्थ
- ख) स्थानिक
- ☒ ग) प्रदेश (न्यायाधीश)
- घ) कोशाध्यक्ष (धनाध्यक्ष)

142. विदेश नीति की वह विधि कौन-सी है जिसमें संधियाँ बनाई जाती हैं?

- क) विग्रह
- ☒ ख) संधि
- ग) संस्रय
- घ) आसन

143. सेना की चार शाखाएँ कौन-सी थीं?

- क) नौसेना, पैदलसेना, घुड़सवार, टैंक
- ☒ ख) पैदलसेना, रथ, घुड़सवार, हाथी
- ग) अंगरक्षक, गुप्तचर, घुड़सवार, नौसेना
- घ) पैदलसेना, नौसेना, वायुसेना, घुड़सवार

144. भ्रष्ट अधिकारियों को पकड़ने के लिए एक उपाय क्या बताया गया है?

- क) सार्वजनिक न्यायालय
- ख) जनमत
- ☒ ग) निगरानी एवं जाल बिछाना
- घ) नागरिकों द्वारा जुर्माना

145. युवराज प्रायः राज्य की रक्षा में कौन-सी भूमिका निभाता था?

- क) मंदिर निर्माण
- ख) बजट प्रबंधन
- ☒ ग) सैन्य अभियानों का नेतृत्व
- घ) विधिक सुधार

146. चांसलर की प्रणाली के अन्तर्गत गाँवों के छोटे समूहों का प्रबंधन कौन करता था?

- क) संनिधात्र
- ☒ ख) गोप
- ग) नागरिका
- घ) प्रदेश

147. प्रारम्भिक वैदिक काल में मुख्य राजनीतिक इकाई क्या थी?

- क) राज्य
- ☒ ख) जनता (जनजाति)
- ग) प्रदेश
- घ) ग्राम

148. वैदिक शासन व्यवस्था में परामर्शदाता तथा धार्मिक भूमिका किस वर्ग की होती थी?
- क) क्षत्रिय
ख) वैश्य
✓ ग) ब्राह्मण
घ) शूद्र
149. पाठ के अनुसार, वह कौन-सा सिद्धान्त है जिसे राजा के द्वारा बनाए रखा जाता है और जो ब्रह्माण्डीय व्यवस्था का प्रतीक है?
- क) अर्थ
✓ ख) ऋत
ग) कर्म
घ) शास्त्र
150. वैदिक राजनीतिक संरचना में 'कुल' शब्द का क्या तात्पर्य है?
- क) योद्धा वर्ग
ख) जनजातीय पुरोहित
✓ ग) जनजाति में एक पारिवारिक इकाई
घ) एक सैन्य दल

उत्तर-दृशिका

1. ख	2. ख	3. घ
4. क	5. ख	6. ख
7. ग	8. ख	9. ख
10. ग	11. ख	12. घ
13. ग	14. ख	15. ख
16. घ	17. ग	18. घ
19. ख	20. ख	21. क
22. ग	23. ख	24. ग
25. ख	26. ख	27. ख
28. ख	29. ग	30. ख
31. ग	32. क	33. ख
34. ख	35. ग	36. ख
37. ग	38. ग	39. ख
40. ख	41. ग	42. ख
43. क	44. ख	45. क
46. ख	47. ख	48. ख
49. ग	50. क	51. ख
52. घ	53. ख	54. ख
55. ख	56. ख	57. ख
58. ख	59. ग	60. ख
61. ग	62. ग	63. ख
64. ख	65. ग	66. ख
67. ख	68. ख	69. ख

70. ख	71. क	72. ख
73. ग	74. ख	75. ग
76. ख	77. ख	78. क
79. ग	80. ग	81. ख
82. क	83. ख	84. क
85. क	86. क	87. ख
88. क	89. क	90. ख
91. ख	92. ख	93. ख
94. ग	95. ग	96. ग
97. ख	98. ख	99. ख
100. ख	101. क	102. ग
103. ख	104. ख	105. क
106. ख	107. ख	108. ग
109. ख	110. ख	111. ख
112. ख	113. ख	114. ग
115. ख	116. ख	117. ख
118. ख	119. ख	120. ख
121. ग	122. ख	123. ख
124. ख	125. ख	126. ख
127. ख	128. ख	129. ख
130. ख	131. ग	132. ग
133. क	134. ग	135. ख
136. ग	137. क	138. ग
139. घ	140. ग	141. ग
142. ख	143. ख	144. ग
145. ग	146. ख	147. ख
148. ग	149. ख	150. ग